परमेश्वर का छुड़ाने वाला हृदय

आशीष रायचूर

मुद्रण और वितरण: ऑल पीपल्स चर्च एवं विशव सुसमाचार सम्पर्क, बंगलोर
प्रथम संस्करण मार्च 2016

अनुवादक: डॉर्थी शरदकान्त थॉमस
प्रूफ रीडिंग: शरदकान्त थॉमस
मुख पृष्ठ एवं ग्राफिक डिज़ाइन: बिजो थॉमस

Contact Information:
All Peoples Church & World Outreach
#319, 2nd Floor, 7th Main,HRBR Layout
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore
Karnataka, India

Phone: +91-80-25452617 / +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org

इस्तेमाल किए गए बाइबल के संदर्भ पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।

निशुल्क वितरण हेतु

इस पुस्तक का विनामूल्य वितरण ऑल पीपल्स चर्च के सदस्यों , सहयोगियों और मित्रों के आर्थिक अनुदानों के द्वरा संभव हुआ है। यदि आपने इस निःशुल्क पुस्तक के द्वारा आशीष पाई है , तो हम आपको निमंत्रित करते हैं कि ऑल पीपल्स चर्च की निःशुल्क प्रकाशन सामग्री की छपाई और वितरण में सहायता करने हेतु आर्थिक रूप से हमें योगदान दें. धन्यवाद !

(Hindi Book— The Redemptive Heart of God)

परमेश्वर का छुड़ाने वाला हृदय

प्रेम जो कभी नहीं छोड़ेगा

विषयसूचि

1 परमेश्वर का स्वभाव छुड़ानेवाला है **3**

इस्राएली लोगों के साथ परमेश्वर का व्यवहार
करने का तरीका 6

जुबिली वर्ष 7

छुड़ाने वाला कुटुम्बी 9

उड़ाऊ पुत्र की कहानी 12

छुटकारे की बड़ी योजना 13

परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय को अपनाना 14

2. परमेश्वर के छुड़ानेवाले कार्य का स्वरूप **17**

परमेश्वर के छुड़ानेवाले कार्य की प्रेरणा उसका
निरंतर अटल प्रेम है जिसकी कोई सीमाएं नहीं 18

परमेश्वर का छुटकारे का कार्य अलौकिक है
परंतु उसमें हमारा साथ में परिश्रम करना शामिल है 21

परमेश्वर के छुटकारे के कार्य में अनुशासन और
कुछ मामले में,आवश्यकता पड़ने पर दण्ड शामिल है 26

परमेश्वर के छुटकारे का कार्य न केवल हमें
अपनी पूर्व स्थिति में लौटाता है, परंतु हमें पहले
से अधिक बेहतर क्षेत्र में ऊंचा उठाता है 28

आप क्या चाहते हैं कि परमेश्वर आपके जीवन में छुड़ाए? 31

3. परमेश्वर के छुटकारे की प्रक्रिया में मुख्य तत्व **34**

समय 34

बलिदान 38

क्षमा 41

पुनःस्थापन 44

परिचय

जब हमारे जीवनों में परिस्थितियां बिगड़ जाती हैं, तब हमें क्या करना चाहिए? अच्छी बातें अचानक बुरी हो जाती हैं और हमने कल्पना भी नहीं की होगी, इतनी वे बिगड़ती जा सकती हैं। ऐसा जीवन के एक या और क्षेत्रों में हो सकता है, शायद हमारे पैसों, परिवार, बच्चों, करियर, व्यवसाय, कारोबार, सेवकाई, या कुछ और क्षेत्रों में हो सकता है। हम बिगड़े हुए जीवन ओर परिस्थितियों की ओर कैसे देखें? उसी तरह, जब उन लोगों के जीवनों में बुरा समय आता है जिन्हें हम जानते हैं या जो हमारे पास सहायता के लिए आते हैं, तब हमारी प्रतिक्रिया क्या होती है? परमेश्वर का हृदय स्वभावतः छुड़ाने वाला है। परमेश्वर जो आरंभ करता है उसे वह नहीं छोड़ता। वह पूर्ण रूप से प्रेम करता और बचाता है, फिर उसकी कीमत चाहे जो हो। परमेश्वर हमेशा छुटकारा देने का और लोगों को अपनी ओर लाने का प्रयास करता है। हमें उसके समान बनने के लिए बुलाया गया है ओर इसलिए जीवन की परिस्थितियों के प्रति और उन समस्याओं के प्रति जिनका हम सामना करते हैं, हमें छुड़ाने वाला होना चाहिए।

इस अध्ययन में, हमारा लक्ष्य परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय को समझना और थाम लेना है, ताकि हम उसकी छुड़ाने वाली नज़रों से जीवन की परिस्थितियों को देखेंगे और हमारे अपने जीवनों में एवं हमारे आस पास के लोगों के जीवनों में उसकी छुड़ाने वाली प्रक्रिया में परमेश्वर के सहकर्मी बनना सीखेंगे।

स्थानीय सत्य और व्यवहारिक कार्य

क्रूस पर मसीह ने सभी लोगों के लिए और सभी बातों के लिए जो कार्य पूरा किया, उसके द्वारा छुटकारा प्रदान किया गया है। विश्वासी होने के नाते, हम यीशु मसीह के लोहू से छुड़ाए गए हैं। मसीह में हम अंधकार की शक्तियों से छुड़ाए गए हैं और हमें परमेश्वर के अपने प्रिय पुत्र के राज्य में लाया गया है। शैतान हम पर अधिकार नहीं जता

सकता हमें दान देकर मोल लिया गया है—आत्मा, प्राण और शरीर और हम परमेश्वर के हैं। मसीह में हमारे स्थान के द्वारा हमारा छुटकारा एक कायम और पूरा कार्य है।

परंतु हमारे जीवनों में यहां पृथ्वी पर, ऐसी कई बातें हो सकती है जो परमेश्वर की योजना, मानक और उद्देश्य के अनुसार नहीं हैं। परमेश्वर चाहता है कि मसीह में हमारे लिए दिए गए उसके छुटकारे को हम देख सकें, छू सकें, और यहां पृथ्वी पर हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों को बदल दें और प्रभावित करे। मसीह में हमारे लिए जो कुछ दिया गया है, वह हमारे प्रतिदिन के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वास्तविक होना चाहिए।

इस अध्ययन में जिन बातों को हम पढ़ रहे हैं उनका संबंध हमारे जीवनों की उन बातों और क्षेत्रों से हैं जहां पर हम परमेश्वर के छुड़ाने वाले कार्य को होते हुए देखना चाहते हैं। हमारी इच्छा यह देखने की हैं कि परमेश्वर का छुड़ाने वाला कार्य हमारे जीवन के उन क्षेत्रों को फिर देखें और पुर्नस्थापित करें जहां पर वे गलत दिशा में गए हैं और परमेश्वर की मूल योजना और उद्देश्य से हट गए हैं, उदाहरण के तौर पर, परिवार, पैसा, बच्चे आदि। हम यह भी विचार करते हैं कि परमेश्वर की छुडाने वाले कार्य को हमारे आस पास के लोगों के जीवनों में कैसे ले आए, उनके जीवनों के क्षेत्रों को भी छुटकारा पाते हुए देख सकें। उसके राजदूत और सहकर्मी होने के नाते, जब हम यह देखने के लिए लोगों की ओर हाथ बढ़ाते हैं कि उनका और अन्य बातों का परमेश्वर से मेल हो, तब हम भी जो कुछ भी हम करते हैं उसमें छुड़ाने वाले बनते हैं।

परमेश्वर आपको आशीष दे!
आशीष रायचूर

1

परमेश्वर का स्वभाव छुड़ाने वाला है

नए नियम में, छुड़ाने या छुटकारे का अर्थ किसी गुलाम को उसके छुटकारे का दाम देकर गुलामी के बंधन से छुड़ाना है।

पुराने नियम में, छुड़ाने या छुटकारे की कल्पना कई तरह से उपयोग की गई है, जैसे : व्यक्तियों या सम्पत्तियों का छुटकारा जिन्हें कर्ज लेने के लिए बेचा गया था; बंधुवाई या विनाश से छुटकारा, हानि और खतरे से रक्षा, दखलअन्दाज़ी के द्वारा अनचाही परिस्थिति में से छुटकारा (जैसे छुटकारे का दाम) या किसी ऐवजदार के कार्य के द्वारा (जैसे बलिदान करना)। जब कुछ उसकी मूल योजना से या अभिकल्पना से हट जाता है और दासत्व, बंधुवाई या विनाश में पड़ जाता है, तब उसे छुड़ाया, वापस लाया और पुनर्स्थापित किया जाता है जिसे हम छुटकारा कहते हैं।

परमेश्वर का स्वभाव छुड़ाने वाला है। परमेश्वर जो कुछ आरंभ करता है उसे वह छोड़ता नहीं। वह अंत तक प्रेम करता है और बचाता हे, चाहे उसके लिए जो कीमत देनी पड़े। परमेश्वर हमें छुड़ाने का प्रयास करता है और सब कुछ खुद के लिए वापस पा लेता है। हमें उसे समान बनने के लिए बुलाया गया है, और इसलिए जीवन की परिस्थितियों के प्रति और जिस समस्याओं का हम सामना करते हैं, उनके प्रति हमारा रवैया भी छुड़ाने वाला होना चाहिए।

हमारे लिए परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय को और वह अपना छुड़ाने का कार्य कैसे करता है ओर उसमें क्या प्रक्रिया शामिल है यह समझना महत्वपूर्ण है, ताकि हम परमेश्वर के साथ परिश्रम करना सीखें जिससे हम लोगों और जीवन की परिस्थितियों का छुटकारा होते और उन्हें परमेश्वर के पास वापस पाते देख सकें।

इफिसियों 1:9,10

[9]कि उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था, [10]कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।

ये वचन हमें सिखाते हैं कि परमेश्वर ने कुछ योजना बनाई है। यह योजना तब तक एक रहस्य था जब तक कि वह नए नियम में प्रगट हुआ। यह उसकी भली मनसा है जिसकी उसने योजना बनाई, कि जब हम सही समय में आगे बढ़ते हैं, तब स्वर्ग और पृथ्वी की सारी वस्तुएं वापस उसके निकट लाई जाएं। वह सब कुछ जिसे वह पुनर्स्थापित करना चाहता है, पूर्ण रूप से उसमें इकट्ठा किया जाएगा।

इफिसियों 1:10 (मेसेज बाइबल)

[10]एक लम्बे समय की योजना जिसमें सब कुछ इकट्ठा किया जाएगा और उसमें जोड़ दिया जाएगा, प्रत्येक, जो आकाश में है, ओर वह प्रत्येक वस्तु जो पृथ्वी ग्रह पर है।

कुलुस्सियों 1:20 में भी यही सत्य निवेदन किया गया है कि परमेश्वर ने सारी वस्तुओं का अपने साथ मेल करने का एक मार्ग खोजा है जो क्रूस के छुड़ाने वाले कार्य के द्वारा है।

कुलुस्सियों 1:20

[20]और उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की।

कुलुस्सियों 1:20 (मेसेज बाइबल)

[20]इतना ही नहीं, क्योंकि विश्व के सभी टूटे हुए बिखरे हुए टुकड़े–लोग और वस्तुएं, और प्राणी और अणु–सही रीति से, पूर्ण मेल के साथ जुड़ जाते हैं, सब उसकी मृत्यु और क्रूस से उसके लोहू के उण्डेले जाने के कारण।

यहां पर जिस मुख्य बात पर हम ज़ोर देना चाहते हैं वह यह है कि यद्यपि लूसिफर के विद्रोह और मनुष्य के पतन के कारण ऐसा लगता है कि सब कुछ बिखर गया है, फिर भी परमेश्वर ने योजना बनाई है और यह देखने के लिए एक मार्ग तैयार किया है कि सब बातें वापस उसके लिए छुड़ाई जाएं। उसके ूस के लोहू के द्वारा, पापी मनुष्य को क्षमा मिल गई है और वापस उसका परमेश्वर से मेल हुआ है। शैतान और उसकी दुष्टात्माएं और जिन्होंने मसीह के उद्धार का इन्कार किया है, वे अनंत काल के लिए नरक में अलग किए जाएंगे और नए आकाश और नई पृथ्वी में परमेश्वर की मूल योजना पुनर्स्थापित होगी। *“फिर मैंने नये आकाश और नयी पृथ्वी को देखा, क्योंकि पहला आकाश और पहली पृथ्वी जाती रही थी, और समुद्र भी न रहा। फिर मैंने पवित्र नगर नए यरूशलेम को स्वर्ग पर से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, और वह उस दुल्हन के समान थी, जो अपने पति के लिए सिंगार किए हो। फिर मैंने सिंहासन में से किसी को ऊंचे शब्द से यह कहते हुए सुना, “देख, परमेश्वर का डेरा मनुष्यों के बीच में है; वह उनके साथ डेरा करेगा, और वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर आप उनके साथ रहेगा; और उनका परमेश्वर होगा। “और वह उनकी आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इसके बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहली बातें जाती रहीं।” और जो सिंहासन पर बैठा था, उसने कहा, “देख, मैं सब कुछ नया कर देता हूं!” फिर उसने कहा, “लिख ले, क्योंकि ये वचन विश्वास के योग्य और सत्य हैं।”* (प्रकाि ात वाक्य 21:1–5)।

परमेश्वर छुड़ाने वाला है। उसका दय स्वभावतः छुड़ाने वाला है। वह चाहता है कि सारी वस्तुएं वापस पुनर्स्थापित हों और उसने पहले ही इसकी योजना बनाई है।

पवित्र शास्त्र में छुटकारे की कई तस्वीरें हैं जो परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय को दर्शाती हैं। हम जल्दी से उसका पुनरीक्षण करेंगे और कुछ महत्वपूर्ण अन्तर्दृष्टियां प्राप्त करेंगे। हमारा उद्देश्य परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय की झलक पाना है और इसे हममें उत्पन्न होते हुए भी देखना है।

इस्राएली लोगों के साथ परमेश्वर का व्यवहार करने का तरीका

परमेश्वर अपने लोगों का छुड़ाने वाला था और उन दुर्दशाओं से जिनमें वे कई बार उनकी अपनी अनाज्ञाकारिता के कारण गिरते थे, उसने उन्हें कई बार छुड़ाया। उसने उन्हें मिस्र की गुलामी से, बाबुल की बन्धुवाई से, और अन्य शत्रुओं से छुड़ाया।

निर्गमन 6:6

[6]इस कारण तू इस्राएलियों से कह, कि मैं यहोवा हूं, और तुमको मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकालूंगा, और उनके दासत्व से तुमको छुड़ाऊंगा, और अपनी भुजा बढ़ाकर और भरी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूंगा।

निर्गमन 15:13

[13]अपनी करूणा से तू ने अपनी छुड़ाई हुई प्रजा की अगुवाई की है, अपने बल से तू उसे अपने पवित्र निवासस्थान को ले चला है।

भजन 78:35

35 और उनको स्मरण होता था कि परमेश्वर हमारी चट्टान है, और परमप्रधान ईश्वर हमारा छुड़ानेवाला है।

यशायाह की पुस्तक के मुख्य विषयों में से एक है छुटकारा, और वह परमेश्वर का उल्लेख 'छुड़ाने वाले के रूप' में 13 बार करती है। छुटकारा मिस्र की गुलामी से छुटकारा (यशायाह 51:10; यशायाह 63:9) और बाबुल की बन्धुवाई से छुटकारा (यशायाह 48:20; यशायाह 52:9; यशायाह 62:12) है।

यशायाह 43:1,2

[1]हे इस्राएल तेरा रचनेवाला, और हे याकूब, तेरा सृजनहार यहोवा अब यों कहता है, मत डर, क्योंकि मैंने तुझे छुड़ा लिया है; मैंने तुझे नाम लेकर बुलाया है, तू मेरा ही है। [2]जब तू जल में होकर जाए, मैं तेरे संग

संग रहूंगा और जब तू नदियों में होकर चले, तब वे तुझे न डुबा सकेंगी; जब तू आग में चले तब तुझे आंच न लगेगी, और उसकी लौ तुझे न जला सकेगी।

इस्राएली लोग समझ गए और उनके छुड़ाने वाले के रूप में उसके साथ व्यवहार करते थे। अपनी विपत्ति के समय वे उसे पुकारते थे और वह उन्हें छुड़ाता था और उन्हें बचाता था।

भजन 107:13,14
[13]तब उन्होंने संकट में चहोवा की दोहाई दी, और उसने सकेती से उनका उध्दार किया; [14]उसने उनको अन्धियारे और मृत्यु की छाया में से निकाल लिया; और उनके बन्धनों को तोड़ डाला।

भजन 107:19,20
[19]तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं, और वह सकेती से उनका उध्दार करता है; [20]वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता और जिस गड़हे में वे पड़े हैं, उससे निकालता है।

भजन 107:28,29
[28]तब वे संकट में यहोवा की दोहाई देते हैं, और वह उनको सकेती से निकालता है। [29]वह आंधी को थाम देता है और तरंगें बैठ जाती हैं।

प्रभु हमारा छुड़ाने वाला है! जब हम उसे अपने छुड़ाने वाले के रूप में जानते हैं, तब हम उस पर विश्वास कर सकते हैं कि वह हमें छुड़ाए, हमारे जीवनों की परिस्थितियों में हमें छुड़ाए, और हम उसके छुटकारे के कार्य उन लोगों के जीवनों में भी होते हुए देखते हैं जिनकी हम सेवा करते हैं।

जुबिली वर्ष

पुराने नियम में अपने लोगों के सामुदायिक जीवन के भाग के रूप में परमेश्वर ने जुबिली वर्ष की स्थापना की, जिसका वर्णन लैव्यव्यवस्था के 25वें अध्याय में पाया जाता है। यह छुटकारे का एक सामर्थी चित्र है।

जिस इब्रानी शब्द का अनुवाद 'जुबिली' किया गया है, उसका अर्थ 'तुरही की आवाज़' है जो घोषणा या ऐलान का दर्शक है। यहूदियों में, प्रत्येक 50वां वर्ष जुबिली वर्ष होता था। इस वर्ष छुटकारे की घोषणा की जाती थी। इस समय सभी गुलामों को आज़ाद कर दिया जाता था, लोगों को स्वतंत्र किया जाता था कि वे अपने अपने वतन की ओर और परिवारों के पास लौट जाएं, और सारी ज़मीन उनके पहले मालिकों को लौटा दी जाती थी। यह समय बड़े आनन्दोत्सव का होता था।

यहां पर कुछ चुनिंदा वचन हैं जो जुबिली वर्ष का वर्णन करते हैं:

लैव्यव्यवस्था 25:10,13,14

[10]और उस पचासवें वर्ष को पवित्र करके मानना, और देश के सारे निवासियों के लिये छुटकारे का प्रचार करना; वह वर्ष तुम्हारे यहां जुबली [13]इस जुबली के वर्ष में तुम अपनी अपनी निज भूमि में लौटने पाओगे। [14]और यदि तुम अपने भाईबन्धु से कुछ मोल लो, तो तुम एक दूसरे पर अन्धेर न करना।

लैव्यव्यवस्था 25–39–41

[39]फिर यदि तेरा कोई भाईबन्धु तेरे सामने कंगाल होकर अपने आपको तेरे हाथ बेच डाले, तो उससे दास के समान सेवा न करवाना। [40]वह तेरे संग मजदूर वा यात्री की नाईं रहे, और जुबली के वर्ष तक तेरे संग रहकर सेवा करता रहे; [41]तब वह बालबच्चों समेत तेरे पास से निकल जाए, और अपने कुटुम्ब में और अपने पितरों की निज भूमि में लौट जाए।

जुबिली वर्ष की स्थापना करने के द्वारा, परमेश्वर लोगों पर अपना हृदय प्रगट कर रहा था। उसका हृदय लोगों के लिए यह है कि वे छुड़ाए जाएं और उनके हित की मूल स्थिति में लौटाएं जाएं। वह यह इच्छा भी व्यक्त करता था कि उसके लोग भी स्वभाव में छुड़ाने वाले हों, वे लोगों को उनके बंधनों से मुक्त करें और आज़ाद करें।

जब प्रभु यीशु मसीह आया, तब उसने कहा कि वह "प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष" की घोषणा करने आया है (लूका 4:19), जो जुबिली वर्ष का उल्लेख है। हम प्रभु के प्रसन्न रहने के वर्ष में रहते हैं, यह जुबिली का समय, सबके छुटकारे का समय और पुनर्स्थापन का समय है।

छुड़ाने वाला कुटुम्बी

"छुड़ाने वाले कुटुम्बी" की कल्पना और प्रथा, जो पुराने नियम में परमेश्वर ने अपने लोगों के मध्य स्थापित की थी, छुटकारे का दूसरा सामर्थी चित्र था।

उसका मूल उपयोग व्यक्तियों और सम्पत्ति के छुटकारे से था जो कर्ज़ के रूप में बेच दिया गया हो, जैसा कि लैव्यव्यवस्था 25:25 में वर्णन किया गया है।

लैव्यव्यवस्था 25:25

25यदि तेरा कोई भाईबन्धु कंगाल होकर अपनी निज भूमि में से कुछ बेच डाले, तो उसके कुटुम्बियों में से जो सबसे निकट हो वह आकर अपने भाईबन्धु के बेचे हुए भाग को छुड़ा ले।

यदि वह मनुष्य जो निर्धन हो गया और उसने अपनी सम्पत्ति बेच दी, परंतु बाद में वह सम्पन्न होता है और जो उसने पहले बेचा था, उसे वापस खरीदने के लिए उसके पास पर्याप्त धन हो, तो वह मनुष्य स्वयं उसे छुड़ा सकता था (लैव्यव्यवस्था 25:26,27)। निर्धन मनुष्य खुद को अपने संगी इस्राएली को बेच सकता था (लैव्यव्यवस्था 25:39) या इस्राएल में रहने वाले विदेशी के पास भी (लैव्यव्यवस्था 25:47)। उसे छुड़ाने की ज़िम्मेदारी (वास्तव में विकल्प) करीबी रिश्तेदार की होती थी – भाई, चाचा, चाचा का बेटा, या उसके परिवार के खून के रिश्तेदार (लैव्यव्यवस्था 25:25,48,49)।

आर्थिक मुश्किलों में फसे व्यक्ति को जो व्यक्ति (कुटुम्बी) छुड़ाता था, उसे छुड़ानेवाला कुटुम्बी कहा जाता था। छुड़ानेवाला कुटुम्बी अपने

निकट सम्बंधी की खराई, जीवन, सम्पत्ति और परिवार के नाम की रक्षा करने की ज़िम्मेदारी रखता था, या उसकी हत्या के लिए न्याय करने की।

रूत की पुस्तक छुड़ाने वाले कुटुम्बी की एक सुंदर कहानी है।

यहूदा देश में पड़े अकाल की वजह से एलिमेलेक और उसकी पत्नी नाओमी, और उसके दो बेटे महलोन और किल्योन बेतलेहेम से निकलकर मोवाब देश में जाकर रहने लगे। इस दौरान एलिमेलेक की मृत्यु हो गई। नाओमी अपने दो बेटों का व्याह मवाबी स्त्रियों से करा दिया, उनमें से एक का नाम था ओर्पा और दूसरी का रूत था। करीब दस वर्षों के बाद नाओमी के दोनों बेटे निःसंतान मर गए। इसलिए उसने अपनी बहुओं से बिनती की कि वे वापस अपने देश लौट जाएं, ब्याह कर लें और जीवन में आगे बढ़ जाएं। ओर्पा ने ऐसा ही किया, परंतु रूत ने अपनी सास के साथ रहने का निर्णय लिया। यह एक अत्यंत साहसपूर्ण फैसला था, क्योंकि नाओमी के पास रूत को देने के लिए कुछ भी नहीं था। जब नाओमी ने रूत को उसके साथ यहूदा प्रांत को जाने से रोकने का प्रयास किया, तब रूत ने एक ऐसा बयान दिया जो उसके समर्पण का वर्णन करता है: *"रूत बोली, तू मुझ से यह बिनती न कर, कि मुझे त्याग वा छोड़कर लौट जा; क्योंकि जिधर तू जाए उधर मैं भी टिकूंगी; तेरे लोग मेरे लोग होंगे, और तेरा परमेश्वर मेरा परमेश्वर होगा; [17]जहां तू मरेगी वहां मैं भी मरूंगी, और वहीं मुझे मिट्टी दी जाएगी। यदि मृत्यु छोड़ और किसी कारण मैं तुझसे अलग होऊ, तो यहोवा मुझसे वैसा ही वरन उससे भी अधिक करे"* (रूत 1:16,17)।

नाओमी और रूत वापस बेतलेहेम को लौट आए। यह जौ की कटनी का समय था। पूरे नगर में रूत के बारे में चर्चा फैल गई, जो कि एक विदेशी, मवाबी महिला थी, और उसके समर्पण के विषय में लोग बातें करने लगे जो अपनी सास के साथ बनी रही और उसके साथ बेतलेहेम को आई। नाओमी और रूत को अपने जीवन की नई

शुरूवात करनी पड़ी, उन्हें बेतलेहेम में अपने जीवनों को फिर से खड़ा करना पड़ा। रूत को उस प्रयोजन का लाभ उठाना पड़ा जो परमेश्वर ने निर्धन लोगों के लिए किया था, वह खेतों के कोनों से बचा हुआ अनाज इकट्ठा करने लगी। जब रूत कटनी करने वालों के पीछे पीछे खेत में अनाज बीनने लगी, तब वह बीनते बीनते खेत के उस हिस्से में पहुंच गई जो बोअज का था। बोअज़ एलिमेलेक के परिवार से था, जो रूत का ससुर था, और उस समय रूत इस विषय में नहीं जानती थी। बोअज ने रूत पर मेहरबानी की और उसे प्रोत्साहन दिया कि वह उसके खेत से अनाज बिने। रूत ने नाओमी को बताया कि वह बोअज नामक एक व्यक्ति के खेत में अनाज बिन रही थी। नाओमी ने बोअज को पहचान लिया और रूत को बताया कि बोअज़ उनका सम्भवनीय छुड़ानेवाला कुटुम्बी है और उसक बाद उसे समझाया कि वह बोअज को छुड़ानेवाले कुटुम्बी के रूप में उसकी भूमिका अदा करने के लिए निवेदन करे।

रूत 2:20 (मेसेज बाइबल)

20नाओमी ने अपनी बहू से कहा, वह यहोवा की ओर से आशीष पाए, परमेश्वर ने हमें बिल्कुल छोड़ा नहीं है! वह हमसे अब भी प्रेम करता है, बुरे समयों में भी और अच्छे समय में भी!" नाओमी ने आगे कहा, "वह पुरुष तो वाचा के अनुसार हमारा छुड़ानेवाला कुटुम्बी है, हमारा सगा रिश्तेदार!"

रूत ने जब बोअज को निवेदन किया, तब छुड़ानेवाले कुटुम्बी के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए वह आगे बढ़ा। बोअज ने पहले अपने सबसे नज़दीकी रिश्तेदार से पूछा, जो छुड़ानेवाले कुटुम्बियों की पहली कतार में था, कि क्या वह अपनी ज़िम्मेदारी निभाने के लिए तैयार है। "फिर बोअज ने कहा, जब तू उस भूमि को नाओमी के हाथ से मोल ले, तब उसे रूत मोआबीन के हाथ से भी जो मरे हुए की स्त्री है इस मनसा से मोल लेना पड़ेगा, कि मरे हुए का नाम उसके भाग में स्थिर कर दे" (रूत 4:5)। नाओमी की एक बहू थी जो विधवा थी, और छुड़ानेवाले कुटुम्बी का कर्तव्य यह था कि वह न केवल नाओमी का

खेत खरीद ले, परंतु अपने भाई की विधवा से ब्याह करके संतान उत्पन्न करे। छुड़ाने वाला कुटुम्बी भूमि को छुड़ाने के अपने अधिकार को तब तक पूरा नहीं कर पाता था, जब तक कि वह अपने भाई की विधवा से विवाह करने के लिए तैयार न हो। जो रिश्तेदार कतार में पहले था, उसने छुड़ानेवाले कुटुम्बी के रूप में अपनी भूमिका निभाने से इन्कार किया। इसलिए बोअज़ ने कदम बढ़ाया, नाओमी की जमीन छुड़ा ली और रूत से ब्याह भी कर लिया।

जो रूत यहूदी नहीं थी, जो विदेशी थी, जो मवाबी स्त्री थी, जिसका सबकुछ खो चुका था (पति नहीं, बच्चे नहीं) और जिसके पास कुछ नहीं था (वह अपना देश और लोगों को छोडकर अपनी सास के साथ चली आई थी), उसके लिए कुटुम्बी छुड़ानेवाले कदम बढ़ाया और उसे आदर, प्रतिष्ठा, परिवार, पद, और वह सबकुछ फिर से लौटा दिया जिसकी वह इच्छा रखती थी। और इन सारी बातों से परे, छुड़ानेवाले कुटुम्बी के कार्य की वजह से, रूत प्रभु यीशु मसीह के वंश में आ गई (मत्ती 1:5)।

उड़ाऊ पुत्र की कहानी

उड़ाऊ पुत्र की कहानी (लूका 15:11—24) सबके लिए परिचित है। यद्यपि हम इस कहानी में छुटकारे के सारे उपादान नहीं देखते (छुटकारे का दाम), फिर भी हम पिता का हृदय देखते हैं जो अपने बेटे के लौटने की इच्छा रखता है। हम देखते हैं कि भले ही कितनी ही बुराई की गई, फिर भी पिता का हृदय यह देखना चाहता था कि उसका बेटा छुड़ाया जाए और वापस लौट आए। हम केवल कल्पना कर सकते हैं कि पिता रोज़ अपने घर के द्वार पर खड़े होकर अपने गुमराह बेटे के लौटने का इंतजार करता होगा। और पिता के हृदय और मन में बदले, दण्ड या अपमान के विचार नहीं है, परंतु प्रेम, पुनर्स्थापन, क्षमा, और उत्सव के विचार हैं। जब पुत्र लौटता है, तब यही होता है। पिता क्षमा करता है, बेटे को वापस लेता है और उसके आने का उत्सव मनाता है। यह कहानी परमेश्वर, हमारे सनातन पिता के हृदय को प्रगट करती है जो हमारे लिए है। हमारे पिता का हृदय

स्वभावतया छुड़ानेवाला है और वह देखना चाहता है कि हमें क्षमा की जाए, हम चंगे हों, और फिर से पूर्वस्थिति प्राप्त करें।

छुटकारे की बड़ी योजना

छुटकारे की सबसे बड़ी कहानी अर्थात् मानवजाति के लिए परमेश्वर की छुटकारे की योजना है। हमारे सारे पापों के बावजूद, परमेश्वर हमारा सृजनहार है, जो हमारे न्यायी के रूप में विराजमान है, वह स्वयं हमारा छुड़ानेवाला और उद्धारकर्ता बन गया। हम जो पाप के द्वारा उसके शत्रु बन गए थे, उन्हें उसने वापस अपनी ओर लाकर खुद से मेल करा लिया, और हमें पूर्ण रूप से पुनर्स्थापित किया और हमें उसकी दृष्टि में पवित्र और निर्दोष बनाता है। ऐसा उसने पूर्ण रूप से किया। उसने यह हमारे लिए सम्भव बनाया, और प्रत्येक व्यक्ति को निमंत्रण देता है कि उसके पुत्र यीशु मसीह में व्यक्तिगत् रूप से विश्वास करने के द्वारा वह इसे अपना अनुभव बनाए।

कुलुस्सियों 1:20–22

[20]और उसके क्रूस पर बहे हुए लोहू के द्वारा मेल मिलाप करके, सब वस्तुओं का उसी के द्वारा से अपने साथ मेल कर ले, चाहे वे पृथ्वी पर की हों, चाहे स्वर्ग में की। [21]और उसने अब उसकी शारीरिक देह में मृत्यु के द्वारा तुम्हारा भी मेल कर लिया जो पहले निकाले हुए थे और बुरे कामों के कारण मन से बैरी थे, [22]ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र और निष्कलंक, और निर्दोष बनाकर उपस्थित करे।

परमेश्वर के प्रेम की कोई सीमाएं नहीं हैं। उस प्रेम से जो वह हमारे लिए रखता है, कोई भी बात हमें अलग नहीं कर सकती। एक व्यक्ति कितना ही बिगड़ा हुआ क्यों न हो, उसके पाप कितने ही अंधकारमय हों, वह कितना ही दूर क्यों न भटक गया हो, वह कितना ही बर्बाद क्यों न गया हो, उसने खुद पर कितने ही घाव क्यों न कर लिए हो, फिर भी परमेश्वर उससे प्रेम करता है और चाहता है कि उसका छुटकारा हो।

रोमियों 8:38–39

[38]क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, [39]न गहिराई और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।

वह पूर्ण रूप से बचाता है। व्यक्ति चाहे पाप और अधर्म की अत्यंत निम्न अवस्था में भी क्यों न गिर गया हो, वह उन्हें छुड़ाना और बचाना चाहता है।

इब्रानियों 7:25

[25]इसी लिए जो उसके द्वारा परमेश्वर के पास आते हैं, वह उनका पूरा पूरा उद्धार कर सकता है, क्योंकि वह उनके लिए बिनती करने को सर्वदा जीवित है।

परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय को अपनाना

परमेश्वर का हृदय लगा हुआ है निरंतर
खोए हुओं को वापस लाने पर,
जो बर्बाद हुआ है उसे फिर पाने पर,
जो नाश हुआ है उसे पाने पर,
जो बंधा हुआ है उसे छुड़ाने पर,
जो नाश हुआ है उसे फिर बनाने पर,
जो बिगड़ा हुआ है उसे सदुं र बनाने पर,
जो घायल हुआ है उसे चंगा करने पर,
जो क्षीण हुआ है उसे फिर उसे नया बनाने पर,
जो मृतःप्राय है, उसे संजीवित करने पर,
जो मृत है उसे पुनर्जीवित करने पर।

परमेश्वर का स्वभाव छुड़ानेवाला है। जो कार्य वह आरम्भ करता है उसे अधूरा नहीं छोड़ता। वह पूर्ण रूप से प्रेम करता और छुड़ाता है, फिर उसे चाहे जो कीमत चुकानी पड़े। हमें उसके समान बनने के लिए

बुलाया गया है, और इसलिए जीवन की परिस्थितियों के प्रति और जिन समस्याओं का हम सामना करते हैं, उनके प्रति हमारा रवैय्या भी छुड़ानेवाला हो।

जब हम लोगों को, जीवन की परिस्थितियों को, और अन्य बातों को बिगड़ी हुई हैं, देखते हैं, तो हमें उनकी ओर परमेश्वर के छुड़ानेवाले हृदय से देखने की ज़रूरत है।

यदि किसी मित्र ने या ऐसे किसी व्यक्ति ने जिसे आप जानते हैं, अपने जीवन को बर्बाद कर दिया है, और उसके पास अब कोई आशा नहीं बची, तो उनकी ओर परमेश्वर के छुड़ानेवाले हृदय के रूप में देखें। वहां आशा है।

यदि बेटा या बेटी भटक गए हैं, तो उनकी ओर परमेश्वर के छुड़ानेवाले हृदय से देखें। परमेश्वर उन्हें वापस ला सकता है।

यदि आपका वैवाहिक जीवन या घर टूट रहा है, तो उसकी ओर परमेश्वर के छुड़ानेवाले हृदय से देखें। परमेश्वर आपके विलाप को नृत्य में बदल देगा।

यदि आपका अपना जीवन या नौकरी या पैसा या कुछ और अच्छे से बुरा हो गया है और बुरे से और भी बुरा हो गया है, तो आपके लिए परमेश्वर के छुड़ानेवाले हृदय में विश्वास रखें। परमेश्वर लोगों को दलदल की कीच से निकालता है और उन्हें मज़बूत भूमि पर खड़ा करता है।

यदि आपका सपना आपकी आंखों के सामने टूटता हुआ नज़र आता है, फिर भी परमेश्वर आपका छुड़ानेवाला है। वह मरे हुए को जीवन देता है।

व्यक्तिगत लागूकरण

प्रश्न 1: क्या मेरे जीवन में ऐसे लोग या परिस्थितियां हैं जिनकी ओर मुझे परमेश्वर के छुड़ानेवाले हृदय से देखने की ज़रूरत है?

प्रश्न 2: क्या मैं परमेश्वर की छुड़ानेवाली सामर्थ में विश्वास करता हूं कि वह उन्हें या उनकी परिस्थितियों को छुड़ाएगा?

अध्याय 2

परमेश्वर के छुड़ाने वाले कार्य का स्वरूप

भजन 103 अत्यंत परिचित भजन है। उसके कई लाभ जो परमेश्वर हमें देता है उनमें से एक अंश है विनाश से हमारे जीवन को छुड़ाना।

भजन 103:1–6
**1हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके
पवित्र नाम को धन्य करे! 2हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके
किसी उपकार को न भूलना। 3वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता,
और तेरे सब रोगों को चंगा करता है, 4वही तो तेरे प्राण को नाश होने
से बचा लेता है, और तेरे सिर पर करुणा और दया का मुकुट बान्धता
है, 5वही तो तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिस से
तेरी जवानी उकाब की नाईं नई हो जाती है। 6यहोवा सब पिसे हुओं
के लिये धर्म और न्याय के काम करता है।**

यहां पर कुछ घोषणाएं हैं, जिनके द्वारा परमेश्वर जो हमारा छुड़ानेवाला है, उनका हम वर्णन कर सकते हैं।

मेरा छुड़ानेवाला जीवित है (अय्यूब 19:25)।

यहोवा जो इस्राएल का राजा है वह मेरा छुड़ाने वाला है, वही सबसे पहला और वही अंत तक है। (यशायाह 44:6)।

मेरा छुड़ानेवाला सारी पृथ्वी का परमेश्वर है (यशायाह 54:5)।

समस्त संसार मेरे छुड़ाने वाले के हाथ में हैं (यशायाह 44:24)।

मेरा छुड़ानेवाला सामर्थी है; सेनाओं का यहोवा यह उसका नाम है (यिर्मयाह 50:34)।

मेरा छुड़ानेवाला हमारा पिता है, वह प्राचीन काल से है (यशायाह 63:16)।

परमेश्वर हमारी चट्टान है, और परमप्रधान परमेश्वर हमारा छुड़ाने वाला है (भजन 78:35)।

मेरा छुड़ाने वाला दया करता है और मुझ पर अनंत करूणा से दया करता है (यशायाह 54:8)।

इस्राएल का पवित्र मेरा छुड़ाने वाला है और वह मेरी सहायता करेगा (यशायाह 41:14)।

मेरा छुड़ानेवाला सामर्थी है, वह मेरा मुकदमा लड़ेगा (नीतिवचन 23:11, यिर्मयाह 50:34)।

यहोवा जो मेरा छुड़ानेवाला है वह मुझे सफलता के लिए शिक्षा देता है और जिस मार्ग से मुझे जाना है उसमें मुझे चे चलता है (यशायाह 48:17)।

मेरा छुड़ानेवाला सारी बातों को मेरे पक्ष में कर देता है और अनपेक्षित बातों को उत्पन्न करता है (यशायाह 49:26; यशायाह 60:16)।

यहोवा मेरा छुड़ानेवाला है। इस अध्याय में, हम परमेश्वर के छुड़ाने वाले कार्य के विषय में परमेश्वर के स्वभाव का कुछ ज्ञान पाते हैं। विशिष्ट तौर पर उसमें क्या है और वह अपना छुड़ानेवाला कार्य कैसे पूरा करता है।

परमेश्वर के छुड़ानेवाले कार्य की प्रेरणा उसका निरंतर अटल प्रेम है जिसकी कोई सीमाएं नहीं।

पुराने नियम में, हम परमेश्वर के लोगों को बार बार परमेश्वर से दूर जाते हुए देखते हैं और परमेश्वर कई तरह से उन्हें वापस अपने निकट लाने का प्रयास करता है। कभी कभी परमेश्वर उन्हें चेतावनी देने के

लिए, उन्हें सुधारने के लिए और उन्हें वापस परमेश्वर के पास लाने के लिए भविष्यद्वक्ताओं को खड़ा करता है। अन्य समयों में, वह उन्हें बंधुवाई या कठिनाइयों के समयों को सहने की अनुमति देता है ताकि उन्हें वापस लौटा लाएं।

परंतु इन सारी बातों में, हम परमेश्वर के छुड़ाने वाले कार्य को देखते हैं जो अपने लोगों के लिए अत्यधिक प्रेम से पूरा करता है। हम दो अनुच्छेदों पर विचार करेंगे :

यिर्मयाह 31:1—4

[1]उन दिनों में मैं सारे इस्राएली कुलों का परमेश्वर ठहरूंगा और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यही वाणी है। [2]यहोवा यों कहता है: जो प्रजा तलवार से बच निकली, उन पर जंगल में अनुग्रह हुआ; मैं इस्राएल को विश्राम देने के लिये तैयार हुआ। [3]यहोवा ने मुझे दूर से दर्शन देकर कहा है। मैं तुझ से सदा प्रेम रखता आया हुं; इस कारण मैंने तुझ पर अपनी करूणा बनाए रखी है। [4]हे इस्राएली कुमारी कन्या! मैं तुझे फिर बसाऊंगा; वहां तू फिर सिंगार करके डफ बाजने लगेगी, और आनन्द करनेवालों क बीच में नाचती हुई निकलेगी।

यद्यपि परमेश्वर अपने लोगों को यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा बाबुल के हाथों आने वाली विपत्ति और बंधुवाई के विषय में चेतावनी दे रहा था, फिर भी परमेश्वर ने उन्हें अपने प्रेम का आश्वासन दिया। वह उन लोगों के विषय में बोलता है जो जंगल में अनुग्रह पाएंगे, वह अपने लोगों के प्रति उसके सनातन प्रेम के विषय में बोलता है और वह उन्हें आश्वासन देता है कि वह उन्हें फिर बनाएगा और फिर नया करेगा।

होशे 14:1—7

[1]हे इस्राएल, अपने परमेश्वर यहोवा के पास लौट आ, क्योंकि तूने अपने अधर्म के कारण ठोकर खाई है। [2]बातें सीखकर और यहोवा की ओर फिरकर, उससे कह, सब अधर्म दूर कर; अनुग्रह से हमको ग्रहण कर;

तब हम धन्यवाद रूपी बलि चढ़ाएंगे। [3]अश्शूर हमारा उद्धार न करेगा, हम घोड़ों पर सवार न होंगे; और न हम फिर अपनी बनाई हुई वस्तुओं से कहेंगे, तुम हमारे ईश्वर हो; क्योंकि अनाथ पर तू ही दया करता है। [4]मैं उनकी भटक जाने की आदत को दूर करूंगा; मैं सेंतमेंत उनसे प्रेम करूंगा, क्योंकि मेरा क्रोध उन पर से उतर गया है। [5]मैं इस्राएल के लिये ओस के समान हूंगा; वह सोसन की नाईं फूले–फलेगा, और लबानोन की नाईं जड़ फैलाएगा। [6]उसकी जड़ से पौधे फूटकर निकलेंगे; उसकी शोभा जलपाई की सी और उसकी सुगन्ध लबानोन की सी होगी। [7]जो उसकी छाया में बैठेंगे, वह अन्न की नाईं बढ़ेंगे, वे दाखलता की नाईं फूल–फलेंगे; और उसकी कीर्ति लबानोन के दाखमधु की सी होगी।

होशे ने ऐसे समय के दौरान भविष्यद्वाणी की जब इस्राएल राष्ट्र के रूप में उन्नति कर रहा था। परंतु लोग आत्मिक रीति से भटक गए थे और परमेश्वर से दूर हो गए थे। यहां भी, हम देखते हैं कि होशे परमेश्वर के लोगों को जो संदेश दे रहा है, उसमें वह उन्हें वापस अपने निकट आने का निमंत्रण देता है। वह उन्हें आश्वासन देता है कि वह उनसे विनामूल्य प्रेम करता है; वह उनके पीछे हट जाने को चंगा करेगा और उन्हें वापस लौटा लाएगा।

परमेश्वर की छुटकारे की बड़ी योजना परमेश्वर के अटल प्रेम से प्रेरित है।

रोमियों 5:8

[8]परंतु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस प्रकार प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।

प्रेम, परमेश्वर का अपने लोगो के प्रति प्रेम, परमेश्वर के लिए मुख्य प्रेरणा है जिससे वह उन्हें छुड़ाता, पुनर्स्थापित करता, पुनर्निर्माण करता, और पुनर्जीवित करता है। वह सनातन प्रेम से प्रेम करता है। वह विनामूल्य प्रेम करता है। हमें हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम में सुरक्षित रहना सीखने की ज़रूरत है। कभी कभी हम खुद को जिन परिस्थितियों में पाते हैं, वे हमारी ही गलतियों का परिणाम होती हैं। हम भटक गए

और परमेश्वर से दूर हो गए। हमने विद्रोह किया और पाप में जीवन बिताने लगे। हमने अपने जीवनों को बर्बाद किया। परंतु अब, जब हम परमेश्वर की ओर से फिर जाते हैं और उसकी ओर देखते हैं कि वह हमारी दशा से हमें छुड़ाए, तो हम ऐसा कर सकते हैं इसका कारण यह है कि वह अब भी हमसे प्रेम करता है। वह हमसे प्रेम करता है, चाहे हमने कितना ही बुरा काम क्यों न किया हो और कितने ही बुरे क्यों न बन गए हों। और हमारे प्रति उसके प्रेम के कारण वह हमें छुड़ाएगा। *"हम मिट नहीं गए; यह यहोवा की महाकरूणा का फल है, क्योंकि उसकी दया अमर है। प्रति भोर वह नई होती रहती है; तेरी सच्चाई महान है। मेरे मन ने कहा, यहोवा मेरा भाग है, इस कारण मैं उसमें आशा रखूंगा। जो यहोवा की बाट जोहते और उसके पास जाते हैं, उनके लिए यहोवा है"* (विलापगीत 3:22–25)।

उसी तरह, जब हम अपने आसपास के लोगों के जीवनों में परमेश्वर के छुटकारे के काम में उसके साथ मिलकर परिश्रम करते हैं, तब हमें परमेश्वर सदृश प्रेम में चलना सीखना है। हमें उनसे बिनशर्त, सनातन परमेश्वर के विनामूल्य प्रेम से प्रेम करना है। अर्थात, हम यह स्वयं नहीं कर सकते। हमें आत्मा ने सामर्थ दी है कि हम परमेश्वर के प्रेम में चलें (रोमियों 5:5, गलातियों 5:22)। जब हम हमारे आस पास के लोगों में परमेश्वर के छुटकारे के काम को होते हुए देखने के लिए परिश्रम करते हैं, तब हमारे हृदयों में इस प्रकार का प्रेम क्षमा को जन्म देता है, धीरज को सक्षम बनाता है, दया को प्रगट करता है (1 कुरिन्थियों 13:4–8)।

परमेश्वर का छुटकारे का कार्य अलौकिक है परंतु उसमें हमारा साथ में परिश्रम करना शामिल है।

परमेश्वर सर्वशक्तिमान, सर्वसामर्थी है और उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं। वह अत्यंत निराशाजनक परिस्थितियों को भी बदल सकता है। वह उन बातों को पुनः स्थापित कर सकता है और उनका पुनःनिर्माण कर सकता है जो बातें पूर्ण रूप से नाश हो गई हैं। वह हमारी

अधिकतर गंभीर गलतियों से अधिक महान है। वह उस समय से बड़ा है जो हो सकता है कि खो गया हो और उस समय को पुनः प्राप्त कर सकता है। उसके छुटकारे के कार्य में, परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ परिस्थितियों को बदल देती है। परमेश्वर हमें और हमारी परिस्थिति को छुड़ाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाता है, परंतु हमें हमारे जीवनों में उसके छुटकारे के कार्य को ग्रहण करने के लिए उसे उत्तर देना है और उसके साथ मि लकर परिश्रम करना है। उदाहरण के रूप में, जब हम पश्चाताप करते हैं, विश्वास का उपयोग करते हैं, और हमारे जीवनों के एक या अधिक क्षेत्रों में छुटकारा और पुनःस्थापन देखने के लिए धीरज से आगे बढ़ते हैं, तब हम परमेश्वर के छुटकारे के कार्य को प्राप्त करते हैं।

पश्चाताप

पश्चाताप करना वास्तव में अपने मन में बदलाव लाना है। इसका अर्थ यह है कि इससे पहले मैंने एक निश्चित मार्ग के विषय में सोचा था, परंतु अब मैं इस रीति से सोचता हूं जो मेरी पिछली विचारधारा के बिल्कुल विपरीत है। यह बदलाव ऐसा है कि वह पूर्ण रूप से फिर जाना है, हमारी पिछली विचार शैली के बिल्कुल विरूद्ध। इस प्रकार पश्चाताप मन का परिवर्तन है जिसका परिणाम जीवन के पिछले मार्ग से फिर जाना होता है, उस ओर जो पूर्ण रूप से भिन्न है। विचार शैली में इस परिवर्तन का परिणाम फिर हमारे क्रियाओं में, हमारी बातों में, हमारी प्रतिक्रियाओं में, और हमारी पिछली मनोदशा के अंतर्गत जो कुछ हम करते थे, उसमें बदलाव होता है। परमेश्वर अपनी भलाई के द्वारा हमें पश्चाताप के स्थान में लाता है। *"क्या तू उसकी कृपा, और सहनशीलता, और धीरजरूपी ध ान को तुच्छ जानता है? और क्या यह नहीं समझता कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव सिखाती है?"* (रोमियों 2:4)।

पश्चाताप करने की और पश्चाताप के द्वारा जो परिवर्तन आया है उसका अनुसरण करने की हमारी अनिच्छा हमें परमेश्वर के अलौकिक छुटकारे के कार्य को अनुभव करने से रोकती है।

विश्वास

हमें छुड़ाने के लिए वह क्या कर सकता है इसमें हमें विश्वास होना चाहिए। परिस्थिति की गंभीरता, हताशा और लाचारी, भले ही वास्तविक हो, परंतु हमारे छुड़ाने वाले में हमारे विश्वास को कमज़ोर न करने पाए। हमारे परिस्थितियों के पेचीदापन और गंभीरता से परमेश्वर बड़ा है। परमेश्वर उस समय से बड़ा है जो हमने बर्बाद किया है, और वह समय को फिर लौटा सकता है।

भजन 27:13

[13]यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवितों की पृथ्वी पर यहोवा की भलाई को देखूंगा, तो मैं मूर्च्छित हो जाता है।

परमेश्वर हमारे जीवनों में जो छुटकारे का कार्य लाने की इच्छा रखता है, उसकी पूर्णता में हम विश्वास से यात्रा करते हैं। विश्वास निष्क्रिय नहीं है। विश्वास निकम्मापन नहीं है। विश्वास का अर्थ जिन बातों का छुटकारा और पुनर्स्थापन हम देखना चाहते हैं, उसे देखने के लिए परमेश्वर हमसे जो करवाना चाहता है, उसे करना। उदाहरण के तौर पर, यदि हमारी आर्थिक परिस्थिति ठीक नहीं है, हमारा बहुत सारा धन कर्ज़ में और अन्य आर्थिक विपदाओं में बर्बाद हो गया है, तो हम परमेश्वर की ओर देखते हैं, वह जो हमें हमारी सारी मुश्किलों से छुड़ा सकता है। विश्वास से हम खुद को इन आर्थिक मुश्किलों से पूर्ण रूप से छुटकारा पाते हुए देखते हैं, और यह केवल उसके छुटकारे के कार्य के कारण है। उसके बाद हम धीरे धीरे उन बातों को करने लगते हैं, जिसे करने की ज़रूरत है। परमेश्वर इस परिस्थिति से हमें जिस तरह से बाहर निकालेगा, वह तरीका है, नौकरी के लिए परमेश्वर पर विश्वास करना। हम कमाने लगते हैं। उसके बाद हम अपना कर्ज़ अदा करने लगते हैं। और उसके बाद हम परमेश्वर की आशीष का हाथ हमें बहुतायत में उठाते हुए देखते हैं। इस सम्पूर्ण प्रक्रिया के दौरान, हम विश्वास से उसकी ओर देखते हैं कि वह हमारी सम्पत्ति में पूर्ण छुटकारे का कार्य करे।

लड़ाई में व्यस्त के उपरांत, जब दाऊद ज़िकलाग नगर को लौटा, तब उसने पाया कि अमालेकियों ने ज़िकलाग पर आक्रमण किया है और दाऊद की पत्नियों को और उसके सेवकों की पत्नियों को बंधुवा बनाकर ले गए हैं (1 शमुएल 30:1–2)। दाऊद ने खुद को प्रभु में उत्साहित किया, प्रार्थना की, और प्रभु की इच्छा जानी। परमेश्वर ने दाऊद से बातें की और उसे आज्ञा दी कि वह अमेलेकियों का पीछा करे और उससे प्रतिज्ञा की कि दाऊद सबकुछ फिर वापस पा लेगा (1 शमुएल 30:8)। परंतु उठकर शत्रु का पीछा करने के लिए दाऊद को साहस और विश्वास की ज़रूरत पड़ी। विश्वास से, जैसा कि इब्रानियों की पुस्तक में लिखा है, वे *"निर्बलता में बलवंत हुए; लड़ाई में वीर निकलें"* (इब्रानियों 11:34), उन्होंने शत्रु का पीछा किया और सचमुच सबकुछ वापस पा लिया।

धीरज

परमेश्वर में विश्वास के साथ हमेशा धीरज होना चाहिए। धीरज के लिए समय की ज़रूरत होती है। धीरज वह करने की योग्यता है जो समय रहते हमें करना चाहिए। जब परमेश्वर का छुटकारे का कार्य हमारे जीवन में प्रगट होना आरम्भ होता है, तब हमें हर ऋतु में उसके साथ धीरज से चलना है। हम में से कई लोग फौरन काम चाहते हैं। जी हां, कभी कभी कुछ बातें पूर्ण रूप से 'अचानक' बदल जाती हैं। जब ऐसा होता है, तब यह अद्भुत बात है। परंतु अधिकतर समय, परमेश्वर के छुटकारे का कार्य पूरा होने में कुछ समय लग जाता है, और उस कार्य को पूरा होते हुए देखने के लिए हमें धीरज के साथ विश्वास में उसके संग चलना है। अक्सर, कोई बात 'अचानक' होने के बजाए, जब उस यात्रा से धीरे धीरे गुज़रते हैं, तब हम परमेश्वर के विषय में और सीखते हैं और बल पाते हैं। भजन के लेखक ने खुद को एक भयानक गड्हे में पाया। फिर भी अपने मन में विश्वास और धीरज रखकर वह प्रभु की ओर देखता रहा।

भजन 40:1–3

**[1]मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उसने मेरी ओर झुककर
मेरी दोहाई सुनी। [2]उस ने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच
में से उबारा, और मुझ को चट्टान पर खड़ा करके मेरे पैरों को दृढ़ किया
है। [3]और उस ने मुझे एक नया गीत सिखाया जो हमारे परमेश्वर की स्तुति
का है। बहुतेरे यह देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे।**

हमारे छुटकारे की ओर धीरज के साथ परमेश्वर के संग यात्रा करने का एक भाग है अतीत को छोड़े देने की हमारी इच्छा। उसके छुटकारे का अनुभव करने हेतु, हमें अतीत को छोड़ने के लिए तैयार रहना चाहिए। उदाहरण के तौर पर, इस्राएलियों का विचार करें, जब परमेश्वर उन्हें वाचा के देश में ले जाने के लिए मिस्र से बाहर ले आया। उसने उनसे कुछ अद्भुत प्रतिज्ञाएं कीः

निर्गमन 66–8

**[6]इस कारण तू इस्राएलियों से कह, कि मैं यहोवा हूं, और तुमको मिस्रियों
के बोझों के नीचे से निकालूंगा, और उनके दासत्व से तुमको छुड़ाऊंगा,
और अपनी भुजा बढ़ाकर और भरी दण्ड देकर तुम्हें छुड़ा लूंगा। [7]और
मैं तुमको अपनी प्रजा बनाने के लिये अपना लूंगा, और मैं तुम्हारा
परमेश्वर ठहरूंगा; और तुम जान लोगे कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा
हूं जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के नीचे से निकाल ले आया। [8]और जिस
देश के देने की शपथ मैंने इब्राहीम, इसहाक, और याकूब से खाई थी
उसी में मैं तुम्हें पहुंचाकर उसे तुम्हारा भाग कर दूंगा।**

लैव्यव्यवस्था 26:13

मैं तो तुम्हारा वह परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुम को मिस्र देश से इसलिये निकाल ले आया कि तुम मिस्रियों के दास न बने रहो; और मैंने तुम्हारे जुए को तोड़ा है, और तुमको सीधा खड़ा करके चलाया है।

यद्यपि परमेश्वर अपने लोगों को प्रतिज्ञा के देश में ले जा रहा था, फिर भी मार्ग में वे मिस्र के लिए लालायित थे! वे अब भी अतीत की ओर देख रहे थे। भविष्य में उनके लिए जो बड़ी आशीषें रूकी हुईं थीं,

उनकी ओर आगे देखने के बजाए वे उन बातों को पाना चाहते थे जो उन्होंने पायी थी। यात्रा की चुनौती की वजह से उन्होंने महसूस किया कि उनका भूतकाल उनके भविष्यकाल से बेहतर है। परंतु वे गलत थे। और इस कारण, उनमें से कई लोग जंगल में मर गए, उन्हें मिस्र से छुड़ाने के द्वारा परमेश्वर उन्हें जो देना चाहता था, उसकी भरपूरी में वे प्रवेश नहीं कर पाए।

परमेश्वर के छुटकारे के कार्य में अनुशासन और कुछ मामले में, आवश्यकता पड़ने पर दण्ड शामिल है

हमारे जीवन में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य के भाग के रूप में, उसे हमारे जीवनों में गलत बातों में सुधार लाने की ज़रूरत है। यदि हम जल्द ही गलत भावनाओं, गलत आचरणों, गलत इरादों, कल्पनाओं को समझ जाएंगे और खुद में स्वेच्छा से सुधार लाएंगे, तो बहुत अच्छा होगा। परंतु हम में से अधिकतर लोग इतने आज्ञाकारी नहीं होते। जिन बातों को हम पकड़े रहना चाहते हैं, उन्हें त्यागने से हम विरोध करते हैं। कभी कभी हम इनमें से कुछ बातों को गलत नहीं समझते। और इसलिए, परमेश्वर को हमारे जीवनों में सुधार लाने की ज़रूरत पड़ती है, और वह हमारे जीवनों में अपने छुटकारे के कार्य को प्रगट करता है।

उदाहरण के लिए, पति पत्नी का यह विश्वास करना कि परमेश्वर उनके जीवन में छुटकारा लाएगा और उनके रिश्तों को पुनःस्थापित करेगा। दोनों को गलत स्वभाव और आचरण में सुधार लाने की ज़रूरत होगी। कभी–कभी यह उनकी गिरावट का एक भाग हो सकता है, और शायद उन्हें इस बात का अहसास भी नहीं होगा कि उनके कुछ आचरण या स्वभाव के कारण उनका वैवाहिक जीवन बर्बाद हो गया है, शायद वे सोचते थे कि उनके इस प्रकार के स्वभाव या आचरण में कुछ भी गलत नहीं है। जब वे इसमें से मार्ग निकालने के लिए कार्य करते हैं, तब उन्हें विनम्र बनना है ताकि उनमें सुधार और बदलाव आ सके।

परमेश्वर जिनसे प्रेम करता है उन्हें ताड़ना देता है। उसकी ताड़ना प्रेमपूर्ण सुधार है, जो हमारी भलाई के लिए है, हमारे विनाश के लिए नहीं। यह परमेश्वर के छुड़ानेवाले हृदय से आता है, जो हमारी मूर्खता से हमें छुटकारा देने की कोशिश करता है।

इब्रानियों 12:5—11

**[5]और तुम उस उपदेश को जो तुमको पुत्रों के समान दिया जाता है, भूल
गए हो, कि हे मेरे पुत्र, प्रभु की ताड़ना को हलकी बात न जान, और
जब वह तुझे घुड़के तो हियाव न छोड़। [6]क्योंकि प्रभु, जिससे प्रेम करता
है, उसकी ताड़ना भी करता है; और जिसे पुत्र बना लेता है, उसको
कोड़े भी लगाता है। [7]तुम दुख को ताड़ना समझकर सह लो। परमेश्वर
तुम्हें पुत्र जानकर तुम्हारे साथ बर्ताव करता है। वह कौन सा पुत्र है,
जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता? [8]यदि वह ताड़ना जिसके भागी सब
होते हैं, तुम्हारी नहीं हुई, तो तुम पुत्र नहीं, पर व्यभिचार की सन्तान
ठहरे! [9]फिर जबकि हमारे शारीरिक पिता भी हमारी ताड़ना किया करते
थे, तो क्या हम आत्माओं के पिता के और भी आधीन न रहें, जिससे
जीवित रहें। [10]वे तो अपनी अपनी समझ के अनुसार थोड़े दिनों के लिए
ताड़ना करते थे, परंतु यह तो हमारे लाभ के लिए करता है, कि हम भी
उसकी पवित्रता के भागी हो जाएं। [11]और वर्तमान में हर प्रकार की
ताड़ना आनन्द की नहीं, परंतु शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी
जो उसको सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का
प्रतिफल मिलता है।**

वह उसके वचन के द्वारा, उसके आत्मा के कार्य के द्वारा, हमारे आसपास के लोगों के द्वारा, और कभी—कभी उन परिस्थितियों के द्वारा जिन्हें वह हमारी भलाई के लिए उत्पन्न करता है, हमें सुधारता है। जो सुधारना या ताड़ना वह हमारे जीवन में लाता है, उसे हमें ग्रहण करने के लिए तैयार रहना है।

कभी कभी ऐसा समय होता है जब हमारे जीवनों में उसके छुटकारे के कार्य के एक भाग के रूप में हम न्याय या दण्ड का सामना

करते हैं। हमारा पाप प्रगट होता है ओर हम कुछ समय तक हमारे गलत कामों के परिणामों का सामना करते हैं। परंतु इसमें भी, परमेश्वर हमारे पूर्ण विनाश के लिए नही, परंतु हमारे पुनर्स्थापन और छुटकारे के लिए प्रयास करता है। राजा दाऊद इस बात को समझ गया था जब वह उस परिस्थिति में से गुज़र रहा था, जब परमेश्वर ने उसके हत्या और व्यभिचार के पाप को सब लोगों के सामने उजागर कर दिया। परमेश्वर ने उसे पुनर्स्थापित किया और उसने अपने जीवन पर परमेश्वर की करूणा और भलाई के हाथ को देखा।

हमारे जीवन में उसका ताड़ना का व्यवहार भी दया के साथ अभिव्यक्त होता हैः

यशायाह 54:8

अत्याचार करके और दोश लगाकर वे उसे ले गए; उस समय के लोगों में से किस ने इस पर ध्यान दिया कि वह जीवतों के बीच में से उठा लिया गया? मेरे ही लोगों के अपराधों के कारण उस पर मार पड़ी।

परमेश्वर के छुटकारे का कार्य न केवल हमें अपनी पूर्व स्थिति में लौटाता है, परंतु हमें पहले से अधिक बेहतर क्षेत्र में ऊंचा उठाता है

हमारे जीवन में कार्य करते समय परमेश्वर हमें गौरव से और बड़े गौरव, विश्वास से और बड़े विश्वास और बल से, और बड़े बल की ओर ले जाता है। शुरूवात से समाप्ति भली है, और आरम्भ से अंत भला है, जब परमेश्वर वह करता है। उसी तरह, हमें छुड़ाते समय, परमेश्वर हमें न केवल वह लौटाता है जो था, परंतु उससे भी आगे बढ़कर, हमारे आरम्भ से अधिक बेहतर बातों की ओर हमें ले जाता है।

यूसुफ

यूसुफ के विषय में विचार करें। करीब 13 वर्षों के क्लेश के बाद परमेश्वर उसे जिस स्थान पर ले आया वह इतना अद्‌भुत था कि यूसुफ ने उसे अपने बेटों को नाम देते समय व्यक्त कियाः

उत्पत्ति 41:51,52

[51]और यूसुफ ने अपने जेठे का नाम यह कहकर एनश्शे रखा, कि परमेश्वर ने मुझ से मेरा सारा क्लेश, और मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है। [52]और दूसरे का नाम उसने यह कहकर एप्रैम रखा, कि मुझे दुःख भोगने के देश में परमेश्वर ने फुलाया फलाया है।

अपने पिता के घर में सबसे प्रिय बेटे के रूप में होने से लेकर, वह फिरौन के दरबार में भी और पूरे मिस्र देश में सबसे प्रिय और अनुग्रहीत व्यक्ति बन गया। विशेष रंगबिरंगी पोशाख पहनने से लेकर, अब वह महीन मलमल के वस्त्र पहनने लगा और सोने की चेन से, मिस्र की उत्तम वस्तुओं से विभूषित हुआ। उसके अपने ही भाइयों ने उसे तुच्छ जाना था और उससे विश्वासघात से बेच दिया था, परंतु अब सम्पूर्ण मिस्र के द्वारा उसे आदर और सम्मान प्राप्त हुआ। परमेश्वर ने उसे उसकी सारी विपत्तियों में से छुड़ाया और उसे ऐसे स्थान में ले आया जहां अपने जीवन के अगले हिस्से में वह अपने आरम्भ की तुलना में अति उत्तम दशा में था। यह छुटकारा है।

अय्यूब

परमेश्वर ने अय्यूब के लिए क्या किया सोचें। उसका परीक्षा का थोड़ा समय (बाइबल में यह स्पष्ट नहीं है कि अय्यूब ने कब तक क्लेश सहा, परंतु कम से कम कुछ महीनों का समय होगा और कुछ यहूदी परम्पराओं के अनुसार एक साल का समय हो सकता है) 140 वर्षों की दुगनी आशीष की तुलना में जिसका उसने अनुभव किया, कुछ भी नहीं था।

अय्यूब 42:10

जब अय्यूब ने अपने मित्रों के लिए प्रार्थना की, तब यहोवा ने उसका सारा दुःख दूर किया। और जितना पहले अय्यूब का था, उसका दुगना यहावा ने उसे दे दिया।

अय्यूब 42:12,16,17

[12]और यहोवा ने अय्यूब के बाद के दिनों में उसके पहले के दिनों से अधिक आशीष दी; और उसके चौदह हज़ार भेड़ बकरियां, छः हज़ार ऊंट, हज़ार बैल, और हज़ार गदहियां हो गई। [16]इसके बाद अय्यूब एक सौ चालीस वर्ष जीवित रहा, और चार पीढ़ी तक अपना वंश देखने पाया [17]निदान अय्यूब वृद्धावस्था में दीर्घायु होकर मर गया।

इस्राएली लोग

परमेश्वर ने अपने लोग इस्राएलियों को मिस्र की गुलामी से निकाला, जिसे वे 'लोहा पिघलाने की भट्टी' कहते थे और उसने उन्हें 'अपनी मिरास के लोग' बनाया। जो एक समय गुलाम थे, अब उसके अपने विशेष लोग थे। वह उन्हें उस देश से निकाल ले आया, जहां वे गुलामों के रूप में परिश्रम कर रहे थे और उन्हें ऐसे देश में ले आया जहां दुध और मधु की धाराएं बहती थी। वे आत्मिक रीति से और स्वाभाविक रूप से जिस स्थान में लाए गए, वह उन सारी बातों से बढ़कर था जिसे उन्होंने पहले कभी जाना न था।

व्यवस्थाविवरण 4:20

और तुमको यहोवा लोहे के भट्ठे के सरीखे मिस्त्र देश से निकाल ले आया है, इसलिये कि तुम उसकी प्रजारूपी निज भाग ठहरो, जैसा आज प्रगट है।

व्यवस्थाविवरण 6:21–23

[21]तब अपने लड़के से कहना, कि जब हम मिस्र में फिरौन के दास थे, तब यहोवा बलवन्त हाथ से हमको मिस्र में से निकाल ले आया; [22]और यहोवा ने हमारे देखते मिस्र में फिरौन और उसके सारे घराने को दुःख देनेवाले बड़े बड़े चिन्ह और चमत्कार दिखाए; [23]और हमको वह वहां से निकाल लाया, इसलिये कि हमें इस देश में पहुंचाकर, जिसके विषय में उसने हमारे पूर्वजों से शपथ खाई थी, इसको हमें सौंप दे।

उड़ाऊ पुत्र

उड़ाऊ पुत्र जब घर लौट आया, तब उसके पिता ने उसके लिए जो कुछ किया वह उसने पहले कभी अपने किसी भी बेटों के लिए नहीं किया था। घर लौट आने वाले उड़ाऊ पुत्र को उत्तम पोशाख, अंगूठी दिया गया और उसके लिए बड़े उत्सव का आयोजन किया गया, इस क्षण से पहले उस घर में ऐसा कभी नहीं हुआ था। लूका 15:29 में बड़े बेटे की प्रतिक्रिया से हम इस बात का अनुमान लगा सकते हैं।

छुटकारे की बड़ी योजना

भले ही हम अधम पापी थे, फिर भी अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा, उसने हमें न केवल पाप और शैतान के बंधन से छुड़ाया गया है, बल्कि वह हमें परमेश्वर के परिवार में ले आया और हमें परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस बनाया गया है। हम मसीह के साथ पिता के दाहिने हाथ पर बैठाए गए हैं। इस बात का कोई संकेत नहीं है कि प्रथम पुरुष आदम ने आत्मिक क्षेत्र में ऐसे पद का कभी अनुभव किया हो।

परमेश्वर के छुटकारे का कार्य न केवल हमारी पूर्वस्थिति में हमें स्थापित करता है, बल्कि हमें ऐसे स्थान पर ऊंचा उठाता है जो आरम्भ से कहीं अधिक ऊंचा है।

आप क्या चाहते हैं कि परमेश्वर आपके जीवन में छुड़ाए?

परमेश्वर आपका छुड़ाने वाला है। उसकी छुड़ाने की योग्यता से परे कुछ भी नहीं है। शायद आपके जीवन में ऐसा कुछ है या कई बातें हैं जिन्हें परमेश्वर को छुड़ाने की ज़रूरत है। शायद आपने ऐसे स्वप्न से आरम्भ किया, जो आप जानते थे कि परमेश्वर द्वारा प्रेरित है। परंतु उस क्षण, जीवन की परिस्थितियां आपके उस स्वप्न से इतनी दूर और भिन्न थी कि आपने सोचा कि कभी परिस्थितियां कभी वापस लौट पाएगी। क्या आप विश्वास से उसकी ओर देखेंगे, चाहे आपकी परिस्थिति कैसे क्यों न हो?

आपके जीवन में परमेश्वर अपने छुटकारे के कार्य को किस प्रकार करे इस विषय में उसे हुकुम देने की कोशिश न करें। आपकी परिस्थिति में छुटकारा देने हेतु परमेश्वर जो कुछ करता है और यह वह किस प्रकार करता है इसमें और जो कुछ उसने किसी और के लिए किया, उसमें अंतर हो सकता है। आपके जीवन की परिस्थिति में छुटकारे को देखने के लिए उसके साथ चलना सीखें। जिस बड़ी महिमा में वह आपको लाएगा, उसे वही तय करेगा। वह आपके लिए क्या करेगा इस विषय में आप जो सोचते हैं, वैसा शायद ऐसा न हो; शायद वह पूर्ण रूप से भिन्न हो। उसने किसी और के लिए जो कुछ किया उसकी शायद यह नकल न हो। उसके पास आपके लिए कुछ अनोखा और विशेष हो सकता है, जो वह चाहता है कि आपकी विशिष्ट जीवन परिस्थिति में उसके छुटकारे के कार्य के परिणामस्वरूप हो। वही है जो राख के बदल सुंदरता देता है और वह निश्चित रूप से जानता है कि कौन सी बात आपके जीवन को खूबसूरत बनाएगी ताकि केवल उसकी महिमा प्रकाशित हो।

परमेश्वर के छुटकारे के कार्य की प्रेरणा हमं उस अखंड, अटल प्रेम से प्राप्त होती है जिसकी कोई सीमाएं नहीं हैं। आपके प्रति उसके प्रेम पर यकीन रखें।

परमेश्वर का छुटकारे का कार्य अलौकिक है, परंतु उसमें हमारा उसके साथ परिश्रम करना शामिल है। आपके जीवन में उसके छुटकारे और पुनःस्थापन को देखने के लिए उसके साथ मिलकर परिश्रम करें।

परमेश्वर के छुटकारे के कार्य में अनुशासन और कुछ मामलों में आवश्यकता पड़ने पर दण्ड भी हो सकता है। यदि आपके जीवन में किसी बात में सुधार लाने की ज़रूरत है, तो सुधार लाएं। परमेश्वर के सुधार के अधीन हों। उसका विरोध न करें।

परमेश्वर का छुटकारे का कार्य हमें न केवल पूर्वस्थिति में पुनःस्थापित करता है, बल्कि आरम्भ से भी अधिक उत्तम स्थान में ऊंचा उठाता है। बड़ी महिमा की उम्मीद रखें!

व्यक्तिगत लागूकरण

प्रश्न 1: आपके जीवन के एक या उससे अधिक क्षेत्रों के लिए प्रभु से प्रार्थना करें जिसमें आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपको छुटकारा प्रदान करे। परमेश्वर में अपना विश्वास व्यक्त करें और उसके सामने समर्पण करें कि वस्तुओं की फिर प्राप्ति और पुनःस्थापन के लिए आप उसके साथ चलेंगे।

प्रश्न 2: किसी और के लिए प्रार्थना करें जिसे उसके जीवन में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य की ज़रूरत है। उनके लिए विश्वास से प्रार्थना करें।

3

परमेश्वर की छुटकारे की प्रक्रिया में मुख्य तत्व

परमेश्वर हमें न्योता देता है कि हम उसके समान बनें, हमारा स्वभाव छुड़ाने वाला हो। जब हम अपने खुद के जीवन परिस्थितियों को देखते हैं या जब हम अपने आसपास लोगों के साथ काम करते हैं, तब हमें छुड़ाने वाला हृदय रखना चाहिए। हमें छुड़ाने का, फिर पाने का, संजीवित करने का, नया बनाने का या पुनर्स्थापित करने का प्रयास करना है। इस अध्याय में, हम इस प्रक्रिया को समझने का प्रयास करते हैं जिसके द्वारा परमेश्वर हमारे जीवनों में उसके छुड़ाने वाले कार्य को प्रगट करता है।

परमेश्वर की छुड़ाने वाली प्रक्रिया में समय, बलिदान, क्षमा और पुनर्स्थापन के तत्व शामिल हैं। हम यहां पर परमेश्वर की इस छुड़ाने वाली प्रक्रिया में उसके सहकर्मी बनने के लिए हैं। हमें परमेश्वर के साथ काम करना है, और प्रत्येक तत्व को पहचानना है और उसका अनुसरण करना है, जैसा वह हमारे जीवनों में वस्तुओं को छुड़ाने हेतु कार्य करता है, उसी तरह जब हम दूसरों के जीवनों में उसके छुड़ाने वाले कार्य को होते हुए देखने के लिए उसके साथ परिश्रम करते हैं।

समय

जब समय पूरा होता है, तब परमेश्वर अपना छुटकारे का कार्य पूरा करता है।

परमेश्वर हमेशा काम में व्यस्त था और है। परंतु हम उसके छुटकारे के कार्य की विशिष्ट बातों को समय पूरा होने पर होते हुए देखते हैं जिसे बाइबल *कैरोस* समय कहती है। *कैरोस ग्रीक* शब्द है जो

निश्चित, उचित या सही समय या ऋतु के लिए प्रयुक्त किया जाता है। यह वह समय है जब वस्तुएं पक्व अवस्था में आती हैं (उन बातों का समय पूरा हो जाता है)।

परमेश्वर की महान योजना

गलातियो 4:4,5

[4]परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ। [5]ताकि व्यवस्था के आधीनों को मोल लेकर छुड़ा ले, और हम को लेपालक होने का पद मिले।

परमेश्वर के उद्धार की महान योजना में, यद्यपि परमेश्वर ने अपने छुटकारे के प्रयोजन को पूरा करने हेतु अपने पुत्र को संसार में भेजने से पहले अदन की वाटिका में स्त्री की संतान के आगमन की घोषणा की, जिस बात को 4000 वर्ष बीत चुके। इन 4000 वर्षों के दौरान परमेश्वर कार्य कर रहा था, परमेश्वर लोगों को, सही स्थान को और समय को तैयार कर रहा था। प्रभु यीशु ने खुद को छुटकारे के दाम के रूप में दे दिया और उचित समय में इसकी गवाही दी गई (घोषणा की गई, जाहीर किया गया) (1 तीमुथियुस 2:5,6)।

सनातन उद्देश्य

इफिसियों 1:9,10

[9]कि उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था, [10]कि समयों के पूरे होने का ऐसा प्रबन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, और जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे।

समय की पूर्णता में परमेश्वर के सनातन उद्देश्य का प्रगट होना भी होगा।

हमारे दृष्टिकोण से, इन सब बातों के लिए काफी समय लगता हुआ प्रतीत होता है। परंतु परमेश्वर पूर्ण रूप से जानता है कि वह क्या कर रहा है और वह उन बातों को कब पूरा करेगा।

हम देखते हैं कि लोगों के व्यक्तिगत् जीवनों में, या समूहों में लोगों के मध्य, परमेश्वर के छुटकारे के कार्य में, परमेश्वर सही समय में काम करता है। अय्यूब के जीवन में (याकूब 5:7–11), यूसुफ के जीवन में (भजन 105:19), परमेश्वर समय और ऋतुओं के अनुसार काम कर रहा था (सभोपदेशक 3:11)।

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में बताया है, जब परमेश्वर हमारे व्यक्तिगत् जीवनों में उसके कार्य को प्रगट करता है, तब हमें धीरज रखने की ज़रूरत पड़ती है। जब परमेश्वर पुनःस्थापन लाता है, जो मिट गया है उसका परमेश्वर पुनर्निर्माण करता है, जो कुछ खो गया है, उसे फिर लौटाने हेतु वह हमारी जब सहायता करता है, तब हमें उस समय के दौरान उसके साथ चलने की ज़रूरत है।

परमेश्वर के छुटकारे के कार्य में जब वह उद्धार की ओर लोगों की अगुवाई करता है, उस विषय में हम देखते हैं कि परमेश्वर पवित्र शास्त्र में 'कुशल के दिन' के विषय में बताता है (1 पतरस 2:12)।

उसी तरह थुवातीरा की कलीसिया की एक स्त्री से, प्रभु ने कहा, "मैंने उसको मन फिराने के लिए अवसर दिया, परंतु वह अपने व्यभिचार से मन फिराना नहीं चाहती" (प्रकाशितवाक्य 2:21)। उसी तरह प्रभु यीशु एक नगर (यरूशलेम नगर) के लिए रोया, क्योंकि उन्होंने 'कुशल के समय' को नहीं पहचाना (लूका 19:41–44)।

लोगों को अपनी ओर लाने का कार्य करते समय, परमेश्वर उन्हें समय देता है। वह सही समय में उनसे भेंट करता है और भिन्न भिन्न तरह से उन्हें अपने निकट लाता है।

सहकर्मियों के रूप में हमारा लक्ष्य परमेश्वर जो कुछ कर रहा है उसे पहचानना है और उसके साथ आगे बढ़ना है। हमें अधीर होने की परीक्षा का इन्कार करना है और परमेश्वर जब कुछ करता है, तब उसे पहचानने का प्रयास करना है।

परमेश्वर के साथ परिश्रम करते समय, हम इस बात का अंगीकार करते हैं कि भले ही ऐसा लगता हो कि कुछ नहीं हो रहा है, फिर भी परमेश्वर कार्य कर रहा है।

उदाहरण के तौर पर, यदि आप परिवार के सदस्य को प्रभु के निकट आते हुए देखने के लिए और उनके जीवनों में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य को होते हुए देखने के लिए, परमेश्वर के साथ काम कर रहे हैं; तो इस प्रक्रिया में समय के उपादान को समझें। यद्यपि प्रत्येक के लिए आज का दिन उद्धार का दिन और स्वीकारणीय समय है (2 कुरिन्थियों 6:2), फिर भी प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न समयों में उद्धार के परमेश्वर द्वारा दिए जाने वाले प्रयोजन को स्वीकार करेगा। परमेश्वर के साथ और जिस व्यक्ति के साथ आप काम कर रहे हैं उन्हें समय दें ताकि छुटकारे की प्रक्रिया पूरी हो सके।

आप जानते हैं कि प्रत्येक दिन उस क्षण की ओर आपको निकटला रहा है जब व्यक्तिगत् रूप से उनकी मसीह के साथ भेंट होगी और परमेश्वर उनके जीवनों में एक महान काम करेगा। परंतु, तब तक अब आपको क्या करना चाहिएः

- अवसर आते ही विश्वास से परमेश्वर के बीज बोएं। बीज अंकुरित हो रहे हैं यह देखने के लिए उन्हें खोदते न रहें। अन्यथा जो बीज आप बो रहे हैं, उन्हें आप बर्बाद कर देंगे। उसके वचन की सामर्थ पर भरोसा रखें कि वे फल जाएंगे।
- प्रार्थना में बीज की सिंचाई करें और उस व्यक्ति के जीवन के लिए विश्वास की घोषणा करें।
- उस व्यक्ति के प्रति परमेश्वर के प्रेम, क्षमा, और करूणा को प्रगट करें। वे आपमें और आपके द्वारा परमेश्वर के प्रेम को देखने पाएं।
- उनके जीवनों में छुटकारा और पुनर्स्थापन का अंगीकार करें। उनके जीवनों के लिए परमेश्वर के भविष्यात्मक भवितव्य को बोलें।

याद रखें कि जब हम अन्य लोगों के जीवनों में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य के लिए उसके साथ परिश्रम करते हैं, तब वह व्यक्तिगत् तौर पर हमारे जीवनों में कार्य करता है। इस प्रक्रिया के द्वारा हम परमेश्वर के विषय में बहुत कुछ सीखते हैं। जब हम किसी और के जीवन में उसके छुटकारे के कार्य को पाने की कोशिश करते हैं, तब हम खुद को बदलते हुए देखते हैं।

जब हम अपने व्यक्तिगत् जीवन की परिस्थितियों में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य की खोज करते हैं, तब हम इन्हीं सच्चाइयों को अपने जीवनों में भी लागू करते हैं।

बलिदान

परमेश्वर के छुटकारे की प्रक्रिया में दूसरा मुख्य उपादान है बलिदान।

परमेश्वर की छुटकारे की महान योजना में बलिदान

छुटकारा इसलिए सम्भव हुआ क्योंकि छुटकारे का दाम (मुक्ति का दाम, बलिदान) दिया गया।

प्रभु यीशु ने सबके लिए खुद को छुटकारे के दाम के रूप में दे दिया।

1 तीमुथियुस 2:5,6

[5]क्योंकि परमेश्वर एक ही है; और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात् मसीह यीशु जो मनुष्य है, [6]जिसने अपने आपको सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उसकी गवाही ठीक समयों पर दी जाए।

गलत काम के लिए प्रायश्चित के रूप में या कर्ज रद्द करने के लिए बलिदान दिया जाता है। उसके बाद प्रायश्चित छुटकारे को सम्भव बनाता है।

छुटकारे के लिए बलिदान के विषय में पुराने नियम की समझ आवश्यक है

बलिदान छुड़ानेवाले कुटुम्बी में देखा जाता है। यदि व्यक्ति कर्ज में होता तो छुड़ानेवाला कुटुम्बी उसके छुटकारे का दाम देता था।

पुराने नियम में, सभी तरह के विधियुक्त बलिदानों (उदाहरण के तौर, होमबलि) को 'प्रायश्चित' (kapar) के रूप में समझाया जाता था। प्रायश्चित के वार्षिक दिन (ल्वउ ज्ञपचचनत) का वर्णन लैव्यव्यवस्था की पुस्तक के 16वें अध्याय में विस्तृत रूप से किया गया है, जो कि मसीह के छुटकारे के कार्य की ओर संकेत करता था।

मध्यस्थी, आराधना जैसे आत्मिक बलिदान भी छुटकारे के दाम के रूप में, छुटकारे की कीमत के रूप में उपयोगी हैं, जैसा कि हम पुराने नियम में देखते हैं।

छुटकारे की कीमत के रूप में छुटकारे के दाम की ज़रूरत थी यह समझ बाइबल की अत्याधिक पुरानी पुस्तक, अय्यूब की पुस्तक में भी देखी जाती है।

अय्यूब 33:23,24

23यदि उसके लिए कोई बिचवई स्वर्गदूत मिले, जो हज़ार में से एक ही हो, जो भावी कहे। और जो मनुष्य को बताए कि उसके लिए क्या ठीक है। 24तो वह उस पर अनुग्रह करके कहता है, कि उसे गढहे में जाने से बचा ले, मुझे छुड़ौती मिली है।

जब अय्यूब तकलीफ से गुज़र रहा था, तब उसने मध्यस्थ की लालसा की, ऐसा कोई जो उसकी ओर से परमेश्वर के सामने खड़े रहकर मध्यस्थी करे, और उसमें उसे बाहर निकाले।

अय्यूब 9:32,33

32क्योंकि वह मेरे तुल्य मनुष्य नहीं है कि मैं उस से वादविवाद कर सकूं, और हम दोनों एक दूसरे से मुकदमा लड़ सकें। 33हम दोनों के बीच कोई बिचवई नहीं है, जो हम दोनों पर अपना हाथ रखे।

अय्यूब 16:21

[21]कि कोई परमेश्वर के विरूद्ध सज्जन का, और आदमी का मुकदमा उसके पड़ोसी के विरूद्ध लड़े।

यद्यपि कभी—कभी परमेश्वर के लोग स्वयं परमेश्वर के विरोध में विद्रोह करते थे, फिर भी मूसा ने उनके लिए मध्यस्थी की और परमेश्वर को उन्हें उस छुटकारे के मार्ग से ले जाते हुए देखा।

भजन 106:23

[23]इसलिये उसने कहा, कि मैं इन्हें सत्यानाश कर डालता यदि मेरा चुना हुआ मूसा जोखिम के स्थान में उनके लिये खड़ा न होता ताकि मेरी जलजलाहट को ठण्डा करे कहीं ऐसा न हो कि मैं उन्हें नाश कर डालूं।

मसीह के प्रयोजन को छुड़ाना

प्रभु यीशु ने पहले ही सारी मानवजाति के लिए उद्धार (छुटकारा) प्रदान किया है। फिर भी, परमेश्वर ने अपने लोगों को उसके छुटकारे को व्यक्तिगत् रूप में अनुभव करने हेतु जो कुछ प्रदान किया है, उसे उन्हें उसे सौंपने वाले हम अभिकर्ता हैं। उसकी छुटकारे के प्रक्रिया में उसके सहकर्मियों के रूप में, हमें बलिदान करने हेतु तैयार रहना है। यह बलिदान प्रार्थना, मध्यस्थी, आर्थिक रूप से देने, मुश्किल स्थानों में जाने, आराम को त्यागने, के रूप में हो सकता है, या अन्य रूप में जिसकी कीमत हमें चुकानी पड़ती है।

हम यहां पर मध्यस्थी की भूमिका पर ज़ोर देना चाहेंगे। मध्यस्थी के मसीह के प्रयोजन को दूसरों तक पहुंचाने की इस प्रक्रिया का एक भाग है उद्धार न पाए हुओं के पक्ष में मध्यस्थी करना। क्रूस पर मसीह के बलिदान को मध्यस्थी का कार्य भी कहा जाता है (यशायाह 53:12)।

मध्यस्थी जैसे आत्मिक बलिदान परमेश्वर के छुटकारे की प्रक्रिया में मुख्य तत्व हैं। वह इसलिए छुड़ाता है क्योंकि वह छुटकारे का दाम, बलिदान और मध्यस्थ को देखता है। इसलिए, किसी और के लिए मध्यस्थी करना उनके जीवनों में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य की कुंजी है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उनके छुटकारे का दाम चुका रहे हैं। केवल एक ही परिपूर्ण बलिदान है, जो मसीह ने पहले ही दे दिया है। इसके बदले में, हम परमेश्वर की छुटकारे की प्रक्रिया में उसके सहकर्मियों के रूप में अपनी भूमिका निभा रहे हैं, बलिदान कर रहे हैं, ताकि जो कुछ लोगों के लिए दिया गया है, उसे वे अनुभव कर सकें और पा सकें (देखें कि पौलुस ने कुलुस्सियों 1:24–25 में क्या कहा है)। उन्होंने उद्धार पाया है, हमारे बलिदान के कारण नहीं, परंतु केवल इसलिए कि यीशु ने उनके लिए कुछ किया। हम मसीह के छुटकारे के कार्य में मात्र उसके सहकर्मी हैं, जिसके द्वारा हम उन दुखी लोगों की ओर सहायता का हाथ आगे बढ़ाते हैं जिन्हें वह छुड़ाने का प्रयास करता है।

प्रार्थना, आराधना, मध्यस्थता आदि का आत्मिक बलिदान चढ़ाना आपके जीवन में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य को स्वीकार करने हेतु आपको तैयार करता है। आपकी ओर से दूसरों को आत्मिक बलिदान चढ़ाने हेतु तैयार करना भी सामर्थपूर्ण है।

उसी तरह, जब हम परमेश्वर के साथ परिश्रम करते हुए हमारे आसपास के लोगों के जीवन में उसके छुटकारे के कार्य को लाते हैं, तब हम उनकी ओर से आत्मिक बलिदान चढ़ाते हैं। हम जाकर उनकी सेवा करने, उनकी सहायता करने और उन्हें सुसमाचार सुनाने हेतु बलिदान करते हैं।

क्षमा

परमेश्वर की छुटकारे की प्रक्रिया में अगला मुख्य उपादान है, क्षमा।

इफिसियों 1:7

हमको उसमें उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात् अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है।

परमेश्वर अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा जो हमें क्षमा प्रदान करता है, उसे हमें व्यक्तिगत् रूप से ग्रहण करना है। हमारी सबसे बड़ी समस्याओं में से एक यह है कि यद्यपि हम बौद्धिक रूप से यह

समझते हैं कि परमेश्वर हमें क्षमा करता है, फिर भी हम खुद को क्षमा प्राप्त लोगों के रूप में नहीं देख पाते या कभी–कभी हमने जो गलती की है, उसके लिए खुद को क्षमा नहीं कर पाते। यह सच है कि हमने बहुत बुरा किया होगा, जिसकी वजह से हम आज उस जगह पर आ पहुंचे हैं जहां पर हम हैं। फिर भी, उसके पुत्र यीशु मसीह पर विश्वास के कारण और उसके छुटकारे के लोहू की सामर्थ में, हम क्षमा पाए हुए हैं। अतः हम सब प्रकार के अपराधबोध, लज्जा और दण्ड से मुक्त होकर चल सकते हैं।

कभी–कभी हम खुद को जिन समस्याओं में पाते हैं, उसका कारण अन्य लोगों द्वारा हमारे विरोध में की गई बुराई होती है। जिस प्रकार हमें क्षमा की गई है, उसी प्रकार हमें उन लोगों को क्षमा करना है जिन्होंने हमारे साथ गलत किया है। उनके विरोध में किसी प्रकार की कटु भावना रखने का हमें कोई अधिकार नहीं। क्षमा प्रदान करने में अत्यंत सामर्थपूर्ण ऐसा कुछ है। स्तेफनुस ने शाऊल को क्षमा की, जो उसके पत्थरवाह को देख रहा था। अगली बार हम शाऊल को यीशु से भेंट करते हुए देखते हैं!

उसी तरह, जब हम लोगों के जीवनों में परमेश्वर के छुटकारे के कार्य को देखने हेतु परिश्रम करते हैं, तब हमें लोगों के जीवनों में परमेश्वर की क्षमा का आश्वासन लाना है। हमें उन्हें बताना है कि वे मसीह में शुद्ध किए गए हैं, धर्मी ठहराए गए हैं, और पवित्र किए गए हैं (1 कुरिन्थियों 6:11) और परमेश्वर उनके विरोध में किसी भी तरह का विरोधी भाव नहीं रखता।

परमेश्वर की छुटकारे की प्रक्रिया में लोगों को ऐसे समाज में ग्रहण करना समाहित है जो लोगों को छुड़ाए हुओं के रूप में देखता है, और उनके साथ वैसे ही व्यवहार करता है। कुरिन्थुस की कलीसिया में जिस व्यक्ति ने अनैतिकता का पाप किया था, उसके पश्चाताप करने पर, उसे क्षमा प्राप्त व्यक्ति के रूप में ग्रहण करना था।

2 कुरिन्थियों 2:6–11
**[6]ऐसे जन के लिए यह दण्ड जो भाइयों में से बहुतों ने दिया, बहुत है।
[7]इसलिए इससे यह भला है कि उसका अपराध क्षमा करो; और शान्ति दो,
न हो कि ऐसा मनुष्य बहुत उदासी में डूब जाए। [8]इस कारण मैं तुमसे
बिनती करता हूं कि उसको अपने प्रेम का प्रमाण दो। [9]क्योंकि मैंने इसलिए
भी लिखा था कि तुम्हें परख लूं, कि तुम सब बातों के मानने के लिए तैयार
हो, या नहीं। [10]जिसका तुम कुछ क्षमा करते हो, उसे मैं भी क्षमा करता
हूं, क्योंकि मैंने भी जो कुछ क्षमा किया है, यदि किया हो, तो तुम्हारे
कारण मसीह की जगह में होकर क्षमा किया है, [11]कि शैतान का हम पर
दांव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं।**

फिलेमोन की पुस्तक ओनेसिमस नाम के एक भागे हुए गुलाम की सुंदर कहानी है। उसने कुलुस्सै में अपने स्वामी फिलेमोन से कुछ चुराया था। फिलेमोन एक विश्वासी था और पौलुस का सहकर्मी। ओनेसिमस भाग जाता है और रोम की कैद में उसकी भेंट पौलुस से होती है! वहां पर पौलुस उसे प्रभु के निकट लाता है और फिर उसे इस पत्र के साथ फिलेमोन के पास वापस भेज देता है। यह एक सुंदर कहानी है जहां पौलुस फिलेमोन से अनुरोध करता है कि वह ओनेसिमस को क्षमा करे और उसे ग्रहण करे:

फिलेमोन 1:12,16,17
**[12]उसी को अर्थात् जो मेरे हृदय का टुकड़ा है, मैंने उसे तेरे पास लौटा
दिया है। [16]परन्तु अब से दास के समान नहीं, वरन् दास से भी उत्तम,
अर्थात् भाई के समान रहे, जो शरीर में भी और विशेष कर प्रभु में भी
मेरा प्रिय हो। [17]इसलिए यदि तू मुझे सहभागी समझता है, तो उसे इस
प्रकार ग्रहण कर जैसे मुझे।**

यदि हम इस संसार में परमेश्वर के छुटकारे की प्रक्रिया में परमेश्वर के साथ परिश्रम करने वाला समाज बनना चाहते हैं, तो हमें क्षमा की सामर्थ पर चलना होगा। क्षमा का अर्थ अब हम उनके विरोध में अपने मन में पाप नहीं रखते। अब हम उन्हें दोष देने वाली नज़र से नहीं देखते। हम उस स्वतंत्रता और आज़ादी में आनन्द मनाते हैं जिसमें हम परमेश्वर के समक्ष और एक दूसरे के समक्ष खड़े रहते हैं।

पुनःस्थापन

चौथा मुख्य उपादान जो हम परमेश्वर के छुटकारे की प्रक्रिया में देखते हैं, वह है पुनःस्थापन।

परमेश्वर अपने छुटकारे के हृदय से वस्तुओं की ओर वैसे ही देखता है जैसे वे होंगी, वे वर्तमान समय में जिस तरह दिखाई देती हैं, वैसे नहीं। छुड़ाने वाली आंखें हमेशा आशा के साथ देखती हैं। छुड़ानेवाली आंखें कल्पना करती है कि भविष्य क्या हो सकता है और उसे वास्तविकता बनाने हेतु कार्य करती हैं। छुड़ानेवाली आंखें वर्तमान की विपदा से धुंधली नहीं पड़ जाती।

पुनःस्थापन स्वयं ही एक प्रक्रिया है जहां परमेश्वर वस्तुओं को उनकी मूल स्थिति में लाना आरम्भ करता है और उन्हें और अधिक ऊंचे स्तर पर ले जाता है जो हमने पहले कभी नहीं जाना था। हमें पुनःस्थापन के लिए परमेश्वर पर विश्वास करना चाहिए और हमारे अपने जीवनों में, और हमारे आसपास के लोगों के जीवनों में इस दिशा में कार्य करना चाहिए। पुनःस्थापन देखने के लिए, हमें विश्वास की आंखों से देखना है और विश्वास से उनकी ओर बढ़ना है।

परमेश्वर का छुटकारे का कार्य
जो खो गया है उसे पाता है,
जो नष्ट हो गया है उसे फिर लाता है,
जो बर्बाद हो गया है उसे पुनःस्थापित करता है,
जो बंधा हुआ है उसे मुक्त करता है,
जो नष्ट हो गया है उसका पुनःनिर्माण करता है,
जो बिगड़ चुका है उसे सुंदर बनाता है,
जो घायल हुआ है उसे चंगा करता है,
जो थक चुका है उसे नया बनाता है,
जो मृतःप्राय है उसे संजीवित करता है,
जो मर गया है उसे पुनरूत्थित करता है।

व्यक्तिगत लागूकरण

प्रश्न 1: आपके अपने जीवन में, समय, बलिदान, क्षमा और पुनःस्थापन के चार मुख्य उपादानों का विचार करते हुए, सोचें कि किसी निश्चित व्यक्तिगत जीवन स्थिति को छुटकारा पाते हुए देखने हेतु आप परमेश्वर के साथ उसकी छुटकारे की प्रक्रिया में कैसे कार्य कर सकते हैं।

प्रश्न 2: समय, बलिदान, क्षमा और पुनःस्थापन के चार मुख्य उपादानों का विचार करते हुए, सोचें कि जिस व्यक्ति के साथ आप काम कर रहे हैं, उसके जीवन की किसी निश्चित व्यक्तिगत जीवन स्थिति को छुटकारा पाते हुए देखने हेतु आप परमेश्वर के साथ उसकी छुटकारे की प्रक्रिया में कैसे कार्य कर सकते हैं।

आपका प्रेम कभी टलता नहीं

क्रिस क्विलाला/जीज़स कल्चर

मैं भाग भी जाऊं
तौ भी तेरे प्रेम से मुझे
कुछ नहीं अलग कर सकता

मैं जानता हूं कि मैं गलतियां करूंगा
परंतु प्रतिदिन तेरे पास मेरे लिए नई करूणा है
तेरा प्रेम कभी टलता नहीं

कोरस :
तू युगानूयुग एक सा है
तेरा प्रेम कभी नहीं बदलता
रात में भले ही दुख हो, पर भोर में आनंद होगा

और जब सागर गरजे
मुझे डरना नहीं है
क्योंकि मैं जानता हूं कि तू मुझसे प्रेम करता है
तेरा प्रेम कभी टलता नहीं

हवा तूफानी है और पानी गहरा
परंतु इस खुले समुद्र में मैं अकेला नहीं हूं
क्योंकि तेरा प्रेम कभी टलता नहीं

गहरी खाई बहुत चौड़ी है
मैंने कभी नहीं सोचा कि मैं उस ओर पहुंच पाऊंगा
परंतु तेरा प्रेम कभी टलता नहीं

सेतु :
तू सारी बातों से मेरी भलाई उत्पन्न करता है!

ऑल पीपल्स चर्च के प्रतिभागी

स्थानीय कलीसिया के रूप में संपूर्ण भारत देश में, विशेषकर उत्तर भारत में सुसमाचार प्रचार करने के द्वारा ऑल पीपल्स चर्च अपनी सीमाओं के पार सेवा करता है; उसका मुख्य लक्ष्य (अ) अगुवों को दृढ़ करना, (ब) जवानों को सेवा के लिए सुसज्जित करना और (क) मसीह की देह की उन्नति करना है। संपूर्ण वर्षभर जवानों, और पासबानों तथा सेवकों के लिए कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों और पासबानों की महासभाओं का आयोजन किया जाता है। इसके अलावा, वचन में और आत्मा में विश्वासियों की उन्नति करने के उद्देश्य से अंग्रेजी तथा अन्य कई भारतीय भाषाओं में पुस्तकों की कई हज़ारों प्रतियां विनामूल्य वितरीत की जाती हैं।

जिन बातों की ओर परमेश्वर हमारी अगुवाई कर रहा है उसके लिए काफी पैसों की ज़रूरत होती है। हम आपको निमंत्रित करते हैं कि एक समय की भेंट या मासिक मदद भेजकर आर्थिक रूप से हमारे साथ भागीदार बनें। देश भर में हमारे इस कार्य में हमारी सहायता करने हेतु आपके द्वारा भेजी गई कोई भी रकम सराहनीय होगी।

आप अपनी भेंट “ऑल पीपल्स चर्च, बैंगलोर” के नाम से चेक/बैंक ड्राफ्ट के जरिए हमारे ऑफिस के पते पर भेज सकते हैं। अन्यथा आप अपना योगदान सीधे हमारे बैंक खाते की जानकारी लेकर सीधे बैंक में जमा कर सकते हैं। *(कृपया इस बात को ध्यान में रखें : ऑल पीपल्स चर्च के पास एफ.सी.आर.ए. परमीट नहीं है, अतः हम केवल भारतीय नागरिकों से बैंक योगदान पा सकते हैं। यदि आप चाहते हैं, तो दान भेजते समय, आप स्पष्ट रूप से यह लिख सकते हैं कि ए.पी.सी. की किस सेवकाई के लिए आप अपने दान भेजना चाहते हैं।)*

बैंक खाते का नाम : ऑल पीपल्स चर्च

खाता क्रमांक : 0057213809

आय एफ एस सी क्रमांक : CITI0000004

बैंक : Citibank N.A., 506-507, Level 5, Prestige Meridian 2, # 30, M.G. Road, Bangalore - 560 001

उसी तरह, कृपया जब भी हो सके, हमें और हमारी सेवकाई को प्रार्थना में स्मरण रखें। **धन्यवाद और परमेश्वर आपको आशीष दे।**

ऑल पीपल्स चर्च के प्रकाशन

बदलाव

अपनी बुलाहट से समझौता न करें

आशा न छोड़ें

परमेश्वर के उद्देश्यों को जन्म देना

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है

परमेश्वर का वचन

सच्चाई

हमारा छुटकारा

समर्पण की सामर्थ

हम भिन्न हैं

कार्यस्थल पर महिलाएं

जागृति में कलीसिया

प्रत्येक काम का एक समय

आत्मिक मन से परिपूर्ण और पृथ्वी पर बुद्धिमान

पवित्रा लोगों को सिद्ध बनाना

अपने पास्टर की कैसे सहायता करें

कलह रहित जीवन जीना

एक वास्तविक स्थान जो स्वर्ग कहलाता है

परिशद्ध करने वाले की आग

व्यक्तिगत और पीढ़ियों के बन्ध्नों को तोड़ना

आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पहचानना

राज्य का निर्माण करने वाले

खुला हुआ स्वर्ग

हम मसीह में कौन हैं

ईश्वरीय कृपा

परमेश्वर का राज्य

शहरव्यापी कलीसिया में ईश्वरीय व्यवस्था

मन की जीत

जड़ पर कुल्हाडी रखना

परमेश्वर की उपस्थिति

काम के प्रति बाइबल का रवैया

ज्ञान, प्रकाश और सामर्थ का आत्मा

अन्य अन्य भाषाओं में बोलने के अदभुत लाभ

प्राचीन चिन्ह

उपर्युक्त सभी पुस्तकों के पी डी एफ संस्करण निःशुल्क डाऊनलोड के लिए हमारे चर्च वेब साईट पर उपलब्ध हैं। इनमें से कई पुस्तकें अन्य भाषाओं में भी उपलब्ध हैं। इन पुस्तकों की निःशुल्क प्रतियां प्राप्त करने हेतु कृपया हमसे ई–मेल या डाक द्वारा संपर्क करें।

रविवार के संदेश के एम पी 3 ऑडियो रिकार्डिंग, तथा कॉन्फ्रन्स और हमारे गॉड टी. व्ही. कार्यक्रम 'लिविंग स्ट्रांग' के विडियो रिकार्डिंग को सुनने या देखने के लिए हमारे वेब साईट को भेंट दें।

भारत में ऑल पीपल्स चर्च की शाखाएं

ऑल पीपल्स चर्च के विषय में

ऑल पीपल्स चर्च (एपीसी) का दर्शन बैंगलोर शहर में नमक और ज्योति, और भारत देश और संसार के राष्ट्रों के लिए एक आवाज़ बनना है।

एपीसी में हम पवित्र आत्मा के अभिषेक एवं सामर्थ्य के साथ संपूर्ण एवं किसी प्रकार का समझौता न करते हुए वचन की शिक्षा देने के प्रति समर्पित हैं। हम विश्वास करते हैं कि उत्तम संगीत, सृजनात्मक प्रस्तुति, आधुनिक तंत्रविज्ञान आदि आदि चिन्ह, अद्‌भुत कार्य, आश्चर्यकर्म और पवित्र आत्मा के वरदानों के साथ पवित्र आत्मा की सामर्थ में वचन का प्रचार करने की परमेश्वर द्वारा निर्धारित पद्धतियों का स्थान कभी नहीं ले सकते (1 कुरि. 2:4,5; इब्रा. 2:3,4)। हमारा विषय यीशु है, हमारी विषयवस्तु वचन है, हमारा तरीका पवित्र आत्मा की सामर्थ है, हमारा जुनून लोग हैं, और हमारा लक्ष्य मसीह समान पविपक्वता है।

वर्तमान में ऑल पीपल्स चर्च नीचे दिये पतों पर स्थित हैं।

ऑल पीपल्स चर्च –बंगलौर (कर्नाटक)
ऑल पीपल्स चर्च –मंगलौर (कर्नाटक)
ऑल पीपल्स चर्च –कल्याण मुम्बई (महाराष्ट्र)
ऑल पीपल्स चर्च –ब्रम्हपुर (उड़ीसा)
ऑल पीपल्स चर्च –नागपुर (महाराष्ट्र)
ऑल पीपल्स चर्च –रायचूर (कर्नाटक)
ऑल पीपल्स चर्च –पुणे (महाराष्ट्र)
ऑल पीपल्स चर्च –दिमापुर (नागालैंड)
ऑल पीपल्स चर्च –कोहिमा (नागालैंड)

समय–समय पर नयी कलीसियाओं की स्थापना हो रही है। वर्तमान सूची ऑल पीपल्स चर्च के साथ सम्पर्क करने या अध्कि जानकारी के लिए कृपया आप हमारी वेबसाइट www.apcwo.org में जायें, अथवा contact@apcwo.org पर ई–मेल भेजें।

बाइबल कॉलेज

विश्वसनीय एवं योग्य स्त्री और पुरुषों को सुसज्जित करने, प्रशिक्षित करने और भारत तथा अन्य देशों में सेवा हेतु भेजने के उद्देश्य से ऑगस्ट 2005 में ऑल पीपल्स चर्च – बाइबल कॉलेज एवं मिनिस्ट्री ट्रेनिंग सेन्टर (APC - BC& MTC) की स्थापना की गई, ताकि गांवों, नगरों और शहरों को यीशु मसीह के लिए प्रभावित किया जा सके।

APC - BC& MTC दो कार्यक्रम प्रदान करता है :

- दो साल का **बाइबल कॉलेज** कार्यक्रम पूर्णकालीन विद्यार्थियों के लिए है और उत्कृष्ट शिक्षा के साथ आत्मिक और व्यवहारिक सेवा प्रशिक्षण प्रदान करता है। दो वर्षीय कार्यक्रम पूरा करने के बाद विद्यार्थियों को **डिप्लोमा इन थियोलॉजी ॲण्ड क्रिश्चियन मिनिस्ट्री** (Dip. Th.& CM) प्रदान की जाएगी।

- प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री ट्रेनिंग बाइबल कॉलेज के उन पद्वीधरों के लिए है जो व्यवहारिक प्रशिक्षण पाना चाहते हैं। एक या दो साल पूरा करने वालों को **सर्टिफिकेट इन प्रेक्टिकल मिनिस्ट्री** प्रदान किया जाएगा जो उनके प्रशिक्षण काल को दर्शाता है।

कक्षाएं अंग्रेजी में होती हैं। हमारे पास प्रशिक्षित तथा अभिषक्त शिक्षक हैं।

इसके अतिरिक्त, सन 2012 में, चाम्पा क्रिश्चियन हॉस्पिटल की सहभागिता से हमने चाम्पा, छत्तीसगढ़ में अपने प्रथम अल्पकालीन (2.5 महीने) कार्यक्रम का संचालन किया। हमने इस कॉलेज से 45 विद्यर्थियों को प्रशिक्षित किया।

क्या आप उस परमेश्वर को जानते हैं जो आपको प्यार करता है?

लगभग 2000 वर्ष पहले परमेश्वर इस संसार में एक मनुष्य बनकर आए। उनका नाम यीशु है। उन्होंने पूर्ण पापरहित जीवन जीया। चूँकि यीशु मानव रूप में परमेश्वर थे, उन्होंने जो कुछ कहा और किया उसके द्वारा हमारे समक्ष परमेश्वर को प्रकट किया। उन्होंने जो वचन कहे वे परमेश्वर के ही वचन थे। जो कार्य उन्होंने किये वे परमेश्वर के कार्य थे। यीशु ने बहुत से चमत्कार इस पृथ्वी पर किये। उन्होंने बीमारों और पीड़ितों को चंगा किया। अंधों को आंखें दीं, बहिरों के कान खोले, लंगड़ों को चलाया और हर प्रकार की बीमारी और रोग को चंगा किया। उन्होंने चमत्कार करके कुछ रोटियों से बहुतों को खाना खिलाया था। तूफान को शान्त किया और अन्य बहुत से अद्‌भुत काम किए।

ये सभी कार्य हमारे समक्ष यह प्रकट करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो यह चाहता कि मनुष्य ठीक, स्वस्थ और प्रसन्न रहें। परमेश्वर मनुष्यों की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करना चाहता है।

परमेश्वर ने मानव बनकर इस पृथ्वी पर आने का निश्चय क्यों किया? यीशु इस संसार में क्यों आए?

हम सबने पाप किया है और ऐसे काम किए हैं जो परमेश्वर के समक्ष ग्रहण योग्य नहीं हैं जिसने हमें बनाया है। पाप के परिणाम होते हैं। पाप एक बड़ी दीवार की तरह परमेश्वर और हमारे बीच में खड़ी है। पाप हमें परमेश्वर से अलग करता है। वह हमें उसे जानने और उससे अर्थपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने से रोकता है जिसने हमें बनाया है। अत: हममें से बहुत से लोग इस खालीपन को अन्य वस्तुओं से भरना चाहते हैं।

हमारे पापों का एक और परिणाम यह है कि हम परमेश्वर से सदा के लिए दूर रहते हैं। परमेश्वर के न्यायालय में पाप का दण्ड मृत्यु है। मृत्यु परमेश्वर से सदा के लिए अलगाव है जो हमें नर्क में बिताना पड़ेगा।

परन्तु शुभ समाचार यह है कि हम पाप से मुक्त होकर परमेश्वर से सम्बन्ध रख सकते हैं। बाइबल कहती है, **''पाप की मजदूरी (भुगतान) तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है''** (रोमियों 6:23)। यीशु ने सारे संसार के पापों के लिए मूल्य चुकाया जब उसने क्रूस पर अपने प्राण दिये। तब तीसरे दिन वह जीवित हो गए, बहुतों को उन्होंने अपने आपको जीवित दिखाया और तब वह वापस स्वर्ग चले गए।

परमेश्वर प्रेम और दया का परमेश्वर है। वह नहीं चाहता कि कोई भी नर्क में नाश हो। इसलिए वह आया ताकि सारी मानव जाति को पाप से छुटकारे और उसके अनन्त परिणामों

से बचा सके। वह पापियों को बचाने— आप और मुझ जैसे लोगों को पाप और अनन्त मृत्यु से बचाने आया था।

पाप की निशुल्क क्षमा प्राप्त करने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें केवल एक काम करना है—जो कुछ उसने क्रूस पर किया उसे स्वीकार करना और उस पर पूर्ण हृदय से विश्वास करना है।

जो कोई उस पर विश्वास करेगा, उसको उसके नाम के द्वारा पापों की क्षमा मिलेगी (प्रेरितों के काम 10:43)।

यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा (रोमियों 10:9)।

आप भी अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकते हैं यदि आप प्रभु मसीह पर विश्वास करें।

निम्नलिखित एक साधरण प्रार्थना है ताकि इससे आपको यह फैसला करने में और प्रभु यीशु मसीह के द्वारा आपके लिए किए क्रूस के कार्य पर विश्वास करने में सहायता कर सके। यह प्रार्थना आपकी सहायता करेगी कि आप यीशु के कार्य को स्वीकार करके अपने पापों की क्षमा और उनसे छुटकारा पा सकें। यह प्रार्थना मात्र एक मार्गदर्शिका है। आप अपने शब्दों में भी प्रार्थना कर सकते हैं :

प्रिय प्रभु यीशु, आज मैंने समझा है कि आपने मेरे लिए क्रूस पर क्या किया था। आप मेरे लिए मारे गए! आपने अपना बहुमूल्य रक्त बहाया और मेरे पापों की कीमत चुकाई ताकि मुझे पापों की क्षमा मिले। बाइबल मुझे बताती है कि जो कोई आप में विश्वास करता है उसे उसको पापों की क्षमा मिलती है।

आज मैं आपमें विश्वास करने और जो कुछ आपने मेरे लिए किया है, उसको स्वीकार करने का फैसला करता हूँ, कि आप क्रूस पर मारे गए और फिर जीवित हो गए। मैं जानता हूँ कि मैं अपने आपको अच्छे कामों के द्वारा नहीं बचा सकता हूँ। मैं अपने पापों की क्षमा कमा नहीं सकता हूँ।

आज मैं अपने हृदय में विश्वास करता हूँ और मुँह से कहता हूँ कि आप मेरे लिए मारे गए। आपने मेरे पापों का दण्ड चुकाया। आप मृतकों में से जीवित हो गए और आपमें विश्वास करने के द्वारा मैं अपने पापों की क्षमा और पाप से छुटकारा प्राप्त करता हूँ।

प्रभु यीशु धन्यवाद। मेरी सहायता करें कि मैं आपको प्रेम कर सकूँ। आपको और अधिक जान सकूँ और आपके प्रति विश्वासयोग्य रह सकूँ। आमीन!

परमेश्वर का हृदय स्वभावतः छुड़ाने वाला है। परमेश्वर जो आरंभ करता है उसे वह नहीं छोड़ता। वह पूर्ण रूप से प्रेम करता और बचाता है, फिर उसकी कीमत चाहे जो हो। परमेश्वर हमेशा छुटकारा देने का और लोगों को अपनी ओर लाने का प्रयास करता है। हमें उसके समान बनने हेतु बुलाया गया है ओर इसलिए जीवन की परिस्थितियों के प्रति और उन समस्याओं के प्रति जिनका हम सामना करते हैं, हमारा रवैया भी छुड़ाने वाला होना चाहिए।

इस अध्ययन में, हमारा लक्ष्य परमेश्वर के छुड़ाने वाले हृदय को समझना और थाम लेना है, ताकि हम उसकी छुड़ाने वाली नज़रों से जीवन की परिस्थितियों को देखें और हमारे अपने जीवनों में एवं हमारे आसपास के लोगों के जीवनों में उसकी छुड़ाने वाली प्रक्रिया में परमेश्वर के सहकर्मी बनना सीखें।

परमेश्वर की छुड़ाने वाली प्रक्रिया में समय, बलिदान, क्षमा और पुनर्स्थापन के तत्व शामिल हैं। हम यहां पर परमेश्वर की इस छुड़ाने वाली प्रक्रिया में उसके सहकर्मी बनने के लिए हैं। हमें परमेश्वर के साथ काम करना है, और प्रत्येक तत्व को पहचानना है और उसका अनुसरण करना है, जैसा वह हमारे जीवनों में वस्तुओं को छुड़ाने हेतु कार्य करता है, उसी तरह जब हम दूसरों के जीवनों में उसके छुड़ाने वाले कार्य को होते हुए देखने के लिए उसके साथ परिश्रम करते हैं।

आप क्या चाहते हैं कि परमेश्वर आपके जीवन में क्या छुड़ाए? परमेश्वर आपका छुड़ाने वाला है। कुछ भी उसकी छुड़ाने की योग्यता से परे नहीं हैं। आप विश्वास से उसकी ओर देख सकते हैं, फिर आपकी परिस्थितियां कुछ भी क्यों न हों और उसके छुटकारे के कार्य को अनुभव करें। यह पुस्तक इसमें आपकी सहायता करेगी।

All Peoples Church & World Outreach
319, 2nd Floor, 7th Main, HRBR Layout,
2nd Block, Kalyan Nagar, Bangalore 560 043
Karnataka, INDIA

Phone: +91-80-25452617, +91-80-65970617
Email: contact@apcwo.org
Website: www.apcwo.org